3.2.1 Number of papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during 5 Years (2018-23)

SR NO	Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of journal	Year of publication	ISSN number
1	Hindi ke anbhign kathakaro ki rachanaome pravasi jivan	Dr.Nazama Ansari	Hindi	Printing Area	Apr-21	2339-5303
2	Harivanshray Bachchan ke kavyame yatharth bodh	Dr.Kamlesh Desai	Hindi	Creative Space International Journal	Apr-21	2347-1689
3	Information Seeking Behavior of the faculty member of arts& commerce college city survey	Dr.Vijay Joshi	Library	Journal of humanities & culture	Mar-21	2393-8285
4	જામનગર શહેરના અધ્યાપકોનો ગ્રંથાલય વાંચન રસ એક અધ્યયન	Dr.Vijay Joshi	Library	Surbhi	Mar-21	2349-4557
5	Information Seeking Behavior of the student at shri A.K.Doshi Mahila college A survey	Dr. Vijay Joshi	Library	Ayudh	Mar-21	2321-2160
6	Vinodkumar Shukla ki Upanyaso me kasbai parivesh	Dr.Nazma Ansari	Hindi	Vidyavarta	Apr-21	2319-9318
7	Mahila Kahanikaro ki rachanaome parevartan ki vividh dishaye	Dr.Nazma Ansari	Hindi	Vidyavarta	Jul-21	2319-9318
8	FINANCIAL PERFORMANCE OF ULTRATECH CEMENT LTD AND JK CEMENT LTDF	DR GORDHAN SOLANKI	COMMERCE	ATMAJ	Jul-22	2348-9456
9	RASHTRIYTA KI ITIHASH BHASHI CHETNA OR VIBHAJAN SE JUDE UPNYASH	DR NAZMA ANSARI	HINDI	PRINTING AREA	Mar-23	2394-5303
10	MOHAN RAKESH KE KAHNIO ME PARIVARIK SANVEDNA	DR NAZMA ANSARI	HINDI	VIDYA VARTA	Apr-23	2319-9318
11	INDIAN TAX STRUCTURE-AND AN ANALYTICAL RESPECTIVES	DR GORDHAN SOLANKI	COMMERCE	RESEARCH MATRIX	Mar-23	2321-7073
12	SANSODHAN ANE NITIMATA	DR DHARMISHTA KARDANI	SOCIOLOGY	AYUDH	Feb-23	2321-2160

PRINCIPAL
SHREE A. K. DOSHI MAHILA COLLEGE
JAMNAGAR

ISSN 2394-5303

Issue-75, Vol-03, April 2021

Printing Area

International Peer Reviewed Multilingual Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2021, Issue-75, Vol-03

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

www. विद्यावार्ता ® .कॉम
You Tube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

40) यौन हिंसा और सहज मानवीय यौन नैतिकता की माँग कठगुलाबए
डॉ. जयेश एल. व्यास, राजकोट ||186

41) हिन्दी के अनभिज्ञ कथाकारों की रचनाओं में प्रवासी जीवन
डॉ. नजमा एम. अंसारी, जामनगर ||192

42) सुधा अरोडा के साहित्य में चित्रित नारी
डॉ. जयलक्ष्मी एफ.पाटील, धारवाड ||196

43) भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में मानवतावाद
डॉ. परमार भानु एस.,राजकोट ||199

44) पद्धतियाँ और तकनीक – प्राचीन एवं अर्वाचीन
डॉ.रूपाली दिसावल, प्रो.समीक्षा सोनी, उज्जैन ||203

45) म.गांधी यांच्या स्वराज्याच्या संकल्पनेतून प्रतिबिंबित होणारे राजकीय विचार
श्री. शिवतेज संभाजीराव भोसले ||205

46) संत तुकाराम महाराजाचे समतेविषयक विचार
डॉ.एम.पी.खेडेकर ||207

47) भारत आणि अमेरिका यांच्यातील सर्वसमावेशक जागतिक भागीदारी
डॉ.शरद मधुकर कुळकर्णी, नगाव ||212

48) मराठी भाषा विषयातील संशोधनासाठी वापरण्यात येणारी संशोधन पद्धती
श्री. हनुमान भरत सांगळे ||216

49) समकालीन हिंदी ग़ज़ल में स्त्री विमर्श
प्रो.रजनी शिखरे ||218

50) History of Women in Bengali Literature .....
Dr. Banabina Brahma ||219

51) CORPORATE CRIMINAL LIABILITY IN INDIA : A CHRONOLOGICAL ......
Ms. Deepika Srivastava, Dr. Anjali Mittal, Meerut (U.P.) ||222

52) दहशतवाद आणि मानवी सुरक्षिततेचा प्रश्न
डॉ.शंकर लक्ष्मण सावरगावकर ||230

53) सायबर गुन्हेगारी
प्रा. डॉ. मीना बोर्डे-सुर्यवंशी ||233

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

८. वही, पृ. ३२

९. वही, पृ. ३१

१०. हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, इन्दु प्रकाश पाण्डेय, पृ. १३६

११. वही, पृ. १३९-४०

१२. वही, पृ. १३८-३९

१३. औरतः अस्मिता और अस्तित्व, अरविंद जैन, पृ. ११५

१४. कठगुलाब, मृदुला गर्ग, पृ. १९४

१५. वही, पृ. २३३

१६. हिन्दी के आधुनातन नारी उपन्यास, इन्दु प्रकाश पाण्डेय, पृ. १४४

१७. कठगुलाब, मृदुला गर्ग, पृ. २३४

१८. वही, पृ. २४४

१९. जनसत्ता (समाचार पत्र), ४ मार्च, २००१

❑❑❑

41

हिन्दी के अनभिज्ञ कथाकारों की रचनाओं में प्रवासी जीवन

डॉ. नजमा एम. अंसारी
आसिसटन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,भवन्स,
श्री ए. के. दोशी महिला कॉलेज, जामनगर

****

प्रवासी भारतीयों पर लिखी गई उपर्युक्त मुख्य रचनाओं के अतिरिक्त कई एक अन्य रचनाएँ भी इधर प्रकाशन में आई हैं, जिनमें प्रवासगत प्रसंगों, घटनाओं एवं चरित्रों को बहुआयामी चित्रों के साथ उभारा है। १९८३ में प्रकाशित जोगिन्द्रसिंह कंवल का सात समुद्र पारए नामक उपन्यास में फिजी के अप्रवासी भारतीयों की जीवन-शैली और समस्याओं को लिया गया है। उपन्यास में विदेश में पैदा हुए मोहभंग का सजीव वर्णन तो है ही, साथ में भारत की ताजातरीन यादें भी पात्रों को अक्सर झकझोर देती है। एक भारतीय लडकी फिजी के लडव्के से शादी के बाद खुद को कितना अकेली, असहाय- सी स्थिति में पाती है, जबकि परिस्थितियों के प्रतिघात के कारण बच्चा पैदा नहीं हो पाता है। पैसों के मोह से अभिभूत लडव्की के माँ-बाप बेटी को विदेश भेज देते हैं, जहाँ जाकर उसे सच्चाई का एहसास होता है कि वहाँ पैसा आदि कुछ न होकर सिर्फ फिजी लाना उस लडव्के का लक्ष्य रहता है। उपन्यास की पंक्तियाँ- सपना तो लिया था आकाश में उडवने का। स्वतंत्र और खुशहाल जीवन का। मगर हाल हो गया था पिंजडे में फडफडवते एक पक्षी जैसा जिसके पर पिंजडे की सलाखों से टकरा-टकराकर झडते जा रहे थे। आई थी सपनों के देश में, बाहरी दुनिया देखने। किसी स्वर्ग के लालच में, लेकिन दामन को पकडते जा रहे थे नरक के काँटे।[१]

यही तो मुख्यांश है जो कि लेखक ने सूक्ष्म दृष्टि से वर्णित किया है। किस तरह पैसों के चकाचौंध

Scanned with OKEN Scanner

में लोग विदेश आते हैं, लेकिन-

क्रकहाँ है तुम्हारी कारें, ट्रैक्टर और मकान जिनके बारे में तुम बताया करते थे। मुझे यहाँ बुलाने की खातिर तुमने मेरे साथ धोखा किया है।[२]

जब वस्तुस्थिति सामने आती है, तो सारे रंगीन सपने बिखरते देर नहीं लगती। उपन्यास में यूँ महत्त्वपूर्ण कुछ खास नजर नहीं आता, लेकिन कथ्य में प्रवास की यातना जरूर यत्र-तत्र नजर आती है। शिल्प की दृष्टि से भी यह एक साधारण-सा उपन्यास है, लेकिन विषय की उपर्युक्तता के कारण जरूर उल्लेखनीय बन पडव है। १९७८ में प्रकाशित लक्ष्मीधर मालवीय का किसी और सुबहए विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। इसमें यूँ तो प्रवासी भारतीयों पर कुछ नहीं लिखा गया है, न ही कोई खास ऐसी समस्या पर ही फोकस किया गया है और न ही कथ्य में कोई ऐसा बिन्दु है, जिसे पढव्कर इसका समुचित मूल्यांकन किया जा सके।

सारे उपन्यास में मुख्य पात्र मात्र एक यात्री की तरह सामने आया है, जो जापान से अपनी यात्रा शुरू करके अमेरिका के कई भागों में जाता है। उपन्यास शुरू से अंत तक एक यात्री के ही इर्द-गिर्द घूमता रहता है, जिसकी अमर्जी कोई अस्मिता-बोध एक भारतीय के रूप में मुखरित नहीं हो पाई है- बस एक अंतहीन यात्री की तरह वह तोक्यो से पेरू (दक्षिण अमेरिका), हवाई, होनोलूलू, वुनोस आएरस, लॉस, लीमा आदि विभिन्न जगहों की यात्राएँ करता है, परन्तु क्यों? खास उद्देश्य या अहम् मक्सद पूरे उपन्यास में ही बिखरा-बिखरा सा लगता है। कहानी में एकसूत्रता का अभाव अक्सर खटकता रहता है, क्योंकि मुख्य पात्र की कथा एक लडकी से परिचय के बाद आगे बढती है, जो कि जापान में उससे मिलती है। योशिको नाम की यह लडव्की उसको अक्सर पत्र लिखती रहती है और संवाद इस तरह पत्रों के माध्यम से आगे बढता है। मूल कथा में विस्तार भी धीरे-धीरे इसी षम में आगे बढता रहता है।

षमशः योशिको की कथा में गति आती है। उसके पति ने उसे छोडव दिया है। उसकी एक लडव्की है जिसका नाम वेटि है, जिसे वह बेहद प्यार करती है। लेखक उससे पेरू जाकर मिलता है। तोक्यो से लॉस और लॉस से लीमा तक का सफर तय करके लेखक उससे मिलता है और पुनः कथा में विस्तार होता है। अक्सर उपन्यास में जगहों के वर्णन बहुतायत में मिल जाते हैं, जैसे कि क्रसुबह होते-होते में होनोलूलू पहुँच जा ँगा। अगर वहाँ से लॉस ऐंजेलस की और अगले दिन लॉस से लीमा-रिओ-वुएनोस आएरस की फ्लाइटें मिल गयी तो तीसरे दिन मैं वुएनोस आएरस पहुँच जा ँगा।[३]

पत्रों के द्वारा संवाद के षम में अक्सर अस्तित्ववादी चिंतन भी उभरकर सामने आता है-जैसे कि योशिको अपने बारे में लिखती है- फिर भी देखों मैं जी रही हूँ, कैक्टस की तरह। मैं जिंदगी को इन्कार कभी नहीं करना चाहती, क्योंकि जिंदगी, सारी तकलीफों के बावजूद बडी प्यारी चीज है। इस जिंदगी और इस दुनिया के बाहर कुछ भी नहीं है।ञ४....सिर चकरा रहा है। जीना कितना कठिन है कि मैं खुद बूढवी होती महसूस कर रही हूँ। मेरा हर एक दिन होता है सिर्फ बीत जाने के लिए और मेरी हथेलियों में खालीपन छोड जाने के लिए।[५]

बीच-बीच में अन्य पात्र भी आते रहते हैं, जिनसे संवादों के जरिए ही कथा आगे बढती रहती है। लगता है, किसी और सुबह कहीं और हो और फिर उस नए सुबह में उस नई जगह का वर्णन ही इस उपन्यास के अंग बन सके हैं। वक्त धीरे-धीरे आगे खिसकता जाता है। इसी षम में लेखक आर्जेन्टीना और ब्राजील की सीमा पार करके आगे बढता है। इस उपन्यास में अक्सर भाषा की दुरूहता और जटिलता भी सामने आती है जैसे कि क्रनो नो नो नो। न्यूमेरो द ला रेसिदोन्सिया-नो नो नो-द ला कासा। नो : ला फीर्मा लासीना तूरा-नो नो नो, ला सीना तूरा-ञ६ इसका क्या तात्पर्य है? कहीं भी स्पष्ट नहीं।

एक बार फिर रिओ में लेखक ठहरता है तो तेराओका सान से सम्पर्क करता है, जिसके साथ उसने तोक्यो से यात्रा साथ-साथ की थी। वह भी पति से अलग हो गई है और पुनः जीवन को नए सिरे से जीना चाहती है, किन्तु इस प्रयास में असफल होकर एक बार आत्महत्या की कोशिश करती है, किन्तु लेखक बचा लेता है। अंत में उससे भी अलग होने का वक्त आता है और लेखक वापस जापान की भूमि पर लौटता है।

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2347-1689
Impact Factor 4.00

Creative Space: International Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Journal
Multi-Lingual and Multidisciplinary

Vol. IX No. 2 April - June, 2021

Chief Editor
Dr. Haresh Parmar
Editor
Dr. Moti Lal
Co-Editor
Dr. Neelam

Scanned with OKEN Scanner

Creative Space: International Journal

(Peer-Reviewed & Refereed International Journal)

Multi-Lingual and Multi-Disciplinary

Global Impact Factor: 4.00

Vol. IX, No. 2, April to June, 2021

Chief-in- Editor

Dr. Haresh Parmar

Lecturer, Gujarati Department,

Shree D. K. V. Arts and Science College, Jamnagar

Editor

Dr. Moti Lal

M.Tech. Ph.D. I.I.T., BHU

Guest Editor

Dr. Anil khavdu

Co-Editor

Dr. Neelam (R.S.)

I.M.S., BHU

Skylark Publication

Basuhan, Kardhna Mirzamurad

Varanasi-221307, U.P. (India)

E-mail: skylarkpub@gmail.com **Website :** http://skylarkpublication.in

Scanned with OKEN Scanner

Index

Sr. No.	Title	Page No.
1	Assessing the Need of Value –Based Education in Our Society Dr. Iros Vaja	1-4
2	Empower Women, Empower Society Dr. Parag Devani	5-8
3	Quest of Philosophy in Raja Rao's Novels: A Critical Study Dr. Suray Deo Pandey	9-11
4	The Idea of Region and Nation in R.K. Narayan's The Guide Paresh J. Rabari	12-16
5	Urmila of Kavita Kane's Sita's Sister: An Archetype of a Contemporary Indian Women Nehal Rathod	17-20
6	ઐતિહાસિક નવલકથા પ્રતિક્ષા એસ. મોરી	21-23
7	हिंदी-गुजराती कविता में दलित-चेतना डॉ. बी. के. कलासवा	24-29
8	नवाचार शिक्षा में अध्यापकीय भूमिका डॉ. अर्जुन के. तडवी	30-33
9	धूमिल की कविताओं में जनवादी चेतना डॉ. एन. टी. गामीत	34-37
10	गुजराती दलित साहित्य और उपन्यास डॉ. सुशील जी. धर्माणी	38-45
11	हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना डॉ. महेश एम. पटेल	46-53
12	नई राहों के अन्वेषी: अज्ञेय डॉ. जयेश एल. व्यास	54-59
13	हरिवंशराय बच्चन के काव्य में यथार्थबोध डॉ. कमलेश सी. देसाई	60-61
14	गुरू गोरखनाथ की योग-साधना प्रा. वेकरिया गोविन्दभाई टी.	62-67
15	'आवाँ' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श डॉ. सरोज एम. बारिआ	68-71
16	हिन्दू – मुस्लिम संस्कृति का यथार्थ: अक्षयवट परमार मनहर टी.	72-75
17	सामाजिक चेतना के रूपमें धर्मवीर भारती का कथा साहित्य त्रिवेदी अर्चना एम.	76-78
18	भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति : कल, आज और भविष्य में श्रीमती आराधनाकुमारी लोहार	79-84
19	सुभद्रा कुमारी चौहान का व्यक्तित्वः एक विहंगालोकन राठवा सेगाभाई दलसीग	85-87

Scanned with OKEN Scanner

'हरिवंशराय बच्चन के काव्य में यथार्थबोध'

डॉ. कमलेश सी. देसाई
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
भवन्स श्री ए. के. दोशी महिला
कोलेज, जामनगर

डॉ. हरिवंशराय बच्चन हालावादी कवि माने जाते है । सुबोधभाव और सुन्दर कल्पना उनकी कविता की विशेषता रही है । बच्चनजी की कविताओं में जीवन के विविध भआव प्रकट हुए है । प्रेम की लगन, मस्ती की हलचल, प्रेमी हृदय की वेदना अंधकार पर रात्रिमें (तुम्हारी) सुबह की आशा, मानवजीवन की क्षणभंगुरता, निराशा का आक्रोश, भूख का महत्व, गांधीवादी विचारधारा, मानवजीवन में आधुनिक सभ्यता पर व्यंग्य आदि विविध भावों का सुंदर चित्रण बच्चनजी की कविता का विषय रहा है । मानवजीवन की लालसा और स्वाभाविक तृष्णा का सजीव आलेखन उनकी कविताओं में मिलता है । उमर खैयाम की मस्ती और भावुकता का गेहरा प्रभाव बच्चनजी पर रहा है ।

कवि प्रेम के कवि है । वे मानते है कि प्रेम शाश्वत है, उनका बन्धन जन्म – जन्म का होता है लेकिन प्रेम की पराकाष्ठा वेदना में होती है, जो विरह की आग में जलता नही, तड़पता नही और अपने प्रियपात्र की जुदाइ से जिसका दिल फट नही जाता, वह सच्चा प्रेमी नही हो सकता हैं । जिस प्रकार सोना आग में तपने से और शुद्ध बनता है । उसी प्रकार कलियों से कवितामें प्रेमकी वेदना व्यक्त हुई है बचपन में कविने अपनी प्रेमिका के प्रति क्रुर व्यवहार किया था । उसे याद करके वह विरह की अग्नि में जल जाते है –

क्रूर कार्य यह कैसे करता
सोच इसे हू आहे भरता
कलियो तुमसे क्षमा मांगते
अपराधी मैं हाला ।

बच्चनजी को शराब से अधिक प्रेम है । वे मानते है कि जीवन में मस्ती होनी चाहिए । यदि जीवन में मस्ती नहीं तो जीवन जीने लायक नही, दुनिया स्वार्थी है परन्तु इसे कवि को कोइ मतलब नहीं, उनको तो बस अपनी मस्ती और मादकता से काम है । कवि अपने शराबखाने में मस्ती के जाम पर जाम पीये जा रहे है . वे कहते है –

'मधुर भावनाओं की सुमधुर नित्य बदलाता हूँ हाला,
भरता हूँ इस मद से अपने ही उर का प्याला ।

कवि केवल अपने ही लिए मस्ती का मादकता से अनुभव करना नही चाहते, परंतु दूसरों के लिए भी मस्ती बीखेरना चाहते है और आसपास के वातावरण को मादकता और मस्ती से भर देना चाहते है ।

बच्चनजी चिर आशओं के कवि है । जीवन को क्षणभंगुर मानते है और उनकी नजर में प्रत्येक वस्तु नश्वर है । वह मानते है कि जो चीज बनती है, वह तूटती है परंतु इससे वह निराश नहीं होते । उनका अंधकारमय मार्ग आशाकी किरनें हंमेशा प्रकाशमान करती रहती है । कवि मानव को निर्माण का प्रतिनिधि मानते है इसलिए निराशाओं को छोडकर आशा के दीपक जलाने की सलाह देते है –

'हैं अंधेरी रात पर
दीया जलाना कब मना हैं ।

निर्माण कवितामें कविकी आशावादी दृष्टि का विकाररूप देखने को मिलता है । प्रत्येक वस्तु नश्वर है । सुख-दुःख का चक्र जीवन में चलता रहता है । अंधकारमय रात्रि के बाद उषा के सुनहरे किरण नई रोशनी लाती है । एक वस्तु उजड गई तो भले परंतु उसका नवनिर्माण किया जा सकता है । इस कविता में कविनी गहरी आशा दिखाई देती है । 'जो बीत गई सो बात गई' कविता

Scanned with OKEN Scanner

में आशा और निराशा का समन्वय दिखाई देता है । जीवन टूटनेवाला है, तो फिर उसके टूटने में निराशा क्यों ? निराशा तो उसके जीवन में होती है जो मस्ती को भूल जाता है ।

अमुक कविताओं में कही कही निराशावादी दृष्टिकोण दिखाई देता है लेकिन इनमें जो निराशा दिखाई देती है वह लम्बे अरसे तक नही रहती । 'निशा-निमंत्रण' कविता में कविकी निराशा की झलक दिखाई देती है परन्तु कवि की आशावादी दृष्टि इस निराशा को तुरंत मिटा देती है ।

बच्चनजी की कविता का मुख्य विषय प्रेम रहा है । कवि अपनी प्रियतमा के साथ के एक-एक क्षण गुजारना चाहते है । एक तरफ अपनी प्रियतमा का साथ हो और दुसरी तरफ शराब की बोतल हो, तो स्वर्ग में जानेकी जरूरत नही, कवि कहते है –

'इस पार प्रिय । तुम हो मधु है,
उस पार न जाने क्या होगा ।

कवि बच्चनजी की कलम केवल प्रेम, आशा, मस्ती और निराशा के भावों को व्यक्त करके रूक नही गई परन्तु जीवन के विविधभावों के चित्रण में उसकी अपनी शक्ति का परिचय कराया । 'बंगाल का अकाल' काव्य में मानव की साहजिक वृत्ति भूख को भवानी मानकर उसकी प्रचंडशक्ति का परिचय कराया है और साथ ही साथ उसमें भूखें लोगों की शक्ति का परिचय देकर शासकों और नेताओं को चेतावनी देकर क्रांतिका नारा लगाया है ।

'निम के दो पेड़' कविता में मानवजीवन में श्रध्धा का कितना महत्व है यह बताकर हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति और पश्चिमी सभ्यताका अन्धी अनुकरण वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है । तुलसीदास जैसे महान पंडित – कवि – भक्त की कविता – शक्ति का परिचय भी दिया गया है । 'बुद्ध और नाचघर' कविता में आधुनिक सभ्यता पर करारा व्यंग्य किया गया है । मानव का स्वभाव बडा ही विचित्र होता है । वह भगवान तक की बात सुनने के लिए तैयार नहीं होता अथवा सुनी-अनसुनी कर देता है । यह बताकर मानवजाति का मजाक उडाया गया है ।

कविने 'चोटी की बरफ' कविता में समाज और सामाजिकता का महत्व बताया है । मानव ऐसे अलग रहकर कितना भी महान क्यों न बने परंतु समाज से अलग रहकर वह अपनी महानता खो देता है ऐसे विचार करके समाजमें उपयोगी बनने का सन्देश सुनाया गया है । 'प्रार्थना मतकर मतकर सतकर', कवितामें मार्क्सवादी विचारधारा के दर्शन होते है । कवि इसमे मानवजीवन का मूल्य बताकर ईश्वर की खिल्ली उडाते है । 'गर्म लोहा पीटा' कविता में कविने मौंके का फायदा उठा लेने की सलाह दी है और – 'एक गज सो गज बराबर' हिम्मत ओर हौंसले की महत्ता बताते है ।

बच्चनजीने अपनी कविताओं में गांधीवादी विचारधारा को भी स्थान दिया है । 'सूत की माला और खादी के फूल' कविता में कविने गांधीजी की महत्ता बताकर उनको श्रद्धांजलि दी है ।

उपसंहारः

इस प्रकार श्री हरिवंशराय बच्चनजी की कविताओं में जीवन के विविधभाव मिलते है । वे हिन्दी काव्य जगत की एक महान विभूति है । उनकी कविताएँ मानवजीवन के लिए अति मूल्यवान है क्योंकि कविने मानवहृदयकी भावनाओं का काव्यमय चित्रण बडी कुशलता से किया है । हिन्दी साहित्य में कविता रूपी आकाश में एक चमकते सितारे है । बच्चनजी के सम्बन्ध में कही गई डॉ. नगेन्द्र की यह पंक्ति – प्रत्यक्षः व्यक्तिगत जीवन की कविता होने के कारण बच्चन की कविता का मूल आधार है अनुभूति और उसकी सबसे बडी और बहुत अंशों में एकत्रित शक्ति है ।

अन्ततः बच्चनजी आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक अत्यंत महत्वपूर्ण कवि-व्यक्तित्व महामानव है । इन्होंने गुण और परिणाम, गद्य और पद्य, भाव ओर भाषा दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी भारती के भण्डार को समृद्ध किया है । उनकी जन-मन-रंजकारी काव्यभाषा इतनी सरल, रोचक, समृद्ध और साहित्यिक है जिनके कारण हिन्दीभाषा का प्रत्येक सुधी पाठक उनको हंमेशा याद करेगा । साहित्य में आजभी उनका सम्मान है ।

संदर्भः

1. आजके लोकप्रिय कवि 'हरिवंशराय बच्चन'
2. 'बच्चन' एक अभिनव मूल्यांकन – डॉ. श्यामसुंदर घोष पृ. 123

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor- 3.465
ISSN 2393 - 8285

Journal of Humanities and Culture

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal
for Higher Education A Multidisciplinary Research Journal for All

Vol. VIII 2021 No.1

Quarterly Journal
January - March 2021

Editor in Chief
Dr. Anita Devi
Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Anil Kumar
Faculty of Law
Banaras Hindu University
Varanasi

Co-Editor
Dr. Shiv Shankar Yadav
Department of Hindi
BBAU, Lucknow

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2393-8285

Journal of Humanities and Culture

An International Peer-Reviewed Refereed Research Journal Related to Higher Education
A Multidisciplinary Research Journal for All

Quarterly Journal
January-March, 2021
Vol. VIII, No. 01

Editor in Chief
Dr. Anita Devi
Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Anil Kumar
Faculty of Law
Banaras Hindu University
Varanasi

Co-Editor
Dr. Shiv Shankar Yadav
Asstt. Professor
Deptt. of Hindi
Babasaheb Bhimrao Ambedkar Central University
Lucknow

Skylark Publication
Basuhan, Kardhna Mirzamurad
Varanasi-221307, U.P. (India)
Mob. 9473655180, 7905336902
E-mail: skylarkpub@gmail.com
Website : http://skylarkpublication.in

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor 3.465

Journal of Humanities and Culture

An International Peer- Reviewed & Refereed Research Journal Related to Higher Education, A Multidisciplinary Research Journal for All

Vol. VIII, No.1, January-March, 2021, ISSN 2393-8285

Contents

- **Comparative Analysis of Operating Efficiency of Dena Bank and Bank of Baroda** 1-12
  Somnath K. Joshi
- **Comparative Analysis of Financial Risk Associated with Equity Fund and Equity Tax Planning Fund in India** 13-23
  Daxa C. Trivedi
- **Information Seeking Behavior of the Faculty Member of Arts & Commerce College-Jamnagar City: A Survey** 24-31
  Joshi Vijay R.
  Dr. Mital P. Manavadaria
- **Fine Art (Visual Art) Education during Covid-19 and Future Challenges** 32-37
  Dr. Kumar Jigeeshu
- **Behind the Mist Ancient history of Santals in Jharkhand** 38-42
  Samir Prasad
- **Protection of Wildlife in India: A Critical Analysis** 43-52
  Dr. Nandita Adhikari
- **Trade and Environmental WTO and Beyond** 53-60
  Sakshi Pathak
- **Diasporas Crisis of Identity in Jhumpa Lahiri's The Namesake** 61-65
  Dr. Anand Kunwar
- **फीरोज शाह के समय निर्माण कार्य** 66-67
  कुसुम राय
- **जनपद मऊ में परिवार कल्याण कार्यक्रम की अभिरूचियाँ** 68-75
  डॉ0 शब्बू
- **भारतीय रास्ट्रीय चेतना में गाँधी के आर्थिक दृष्टिकोण** 76-81
  विरेन्द्र कुमार

Scanned with OKEN Scanner

Information Seeking Behavior of the Faculty Member of Arts & Commerce College-Jamnagar City: A Survey

*Joshi Vijay R**
*Dr. Mital P. Manavadaria***

Abstract:
The Present study examines on information seeking behaviors of faculty of arts & Commerce colleges of Jamnagar cities. Data were collected by using a questionnaire from 8 colleges 116 faculties in Jamnagar city. The study investigates the information seeking behavior of the faculty members and attempts to identify the resources used regularly to meet their informational needs, purpose of information seeking, use of Internet and Awareness about Electronic resources for seeking the information, problems faced by faculty members while seeking information.
The research analysis that the majority of faculty member 58 faculty member (50.00%) were visiting the library 2-3 times in a week, most of faculty member 114(98.28%) say the purpose of information seeking is to prepare for teaching. Books and Internet is the main library resource use by faculty member. Search engine and E-books electronic resources most used by faculty member. Some of information materials are old in using the library problem faced by faculty
Keywords: *Information seeking behavior, Library Resources, Arts and Commerce College, faculty member and Jamnagar city*

Introduction:

Teaching is the complex activity involving many variables. It is the unique professional, rational and humor. The teaching and learning process involves complex interactions between the teaching faculty and the learner. Each individual student is different and has not only a variety of needs wants and abilities but also certain anxieties, perceptions intelligence, knowledge, motivation, skills and personal problems.

The libraries attached to the colleges are imparting the education and support more practical process by developing the resources and providing Information and Communication Technology based services

* **Research Scholar, B.K.N.M.University-Janagadh**
** **Research Guide, B.K.N.M.University-Janagadh**

Scanned with OKEN Scanner

International Peer-Reviewed Referred Journal

Surabhi

Impact Factor : 3.1
ISSN - 2349 : 4557
Vol-1
48th Issue
March - 2021

Editor

Mr. Rohit Parmar

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2349-4557

Surabhi

International Peer-Reviewed Refereed Journal

48th Issue | Volume-1 | March-2021

Editor in Chief

Mr. Rohit Parmar

Advisory Committee	
❖ Prof. (Dr.) Chetan Trivedi Vice Chancellor Bhakta Kavi Narsinh Mehta University, Junagadh, Gujarat, India	❖ Mr. Kishor Makwana (Senior Journalist, Administrator, Educator, Editor, Writer, Columnist) Ex. Editor - 'Namskar' & 'Sadhna', Founder: Mission BHIM Website, Board Member: Babasahab Ambedakar Open University, Ahmedabad, Gujarat
❖ Prof. H. N. Vaghela (Former Acting V. C.) Professor & Head, Department of Hindi, M. K. Bhavnagar University, Bhavnagar, Gujarat, India	❖ Dr. Chandrakanta K. Mathur Assistant Professor Department of Political Science, Shyama Prasad Mukharjee College, Delhi University, Delhi, India
❖ Mr. Anilkumar J. Raval (Administrator, Educator, Editor, Writer, Columnist) Editor - Sanskar Dipika, Vidya Bharati, Gujarat Prant, Ahmedabad, Gujarat, India	❖ Prof. Jaydipsinh K. Dodiya Professor & Head, Department of English & CLS, Saurashtra University, Rajkot, Gujarat
Editorial Board	
❖ Mr. Rohit Parmar Chief Editor Ayudh Publication, Bhavnagar, Gujarat, India	❖ Dr. Jiten J. Parmar (GES-II) Associate Editor Assi. Professor, Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh, Gujarat, India
❖ Dr. Dilip B. Kataliya (GES-II) Section Editor Assi. Professor, Government Science College, Mandavi, Kachchha, Gujarat, India	❖ Ms. Surabhi A. Parmar (GES-II) Section Editor Assi. Professor, Government Arts College, Mandal, Ahmedabad, Gujarat, India

Scanned with OKEN Scanner

Valid up to 17/06/2021

Anthelion Impact Factor

Certificate of Acknowledgement

This is to certify that **SURABHI** (International Peer-Reviewed Refereed Journal)
P-ISSN: 2349-4557 E-ISSN: XXXX-XXXX UGC Approval No. XXXXX
has been reviewed and evaluated by our reviewers.
The journal has gone under the Blind Peer Review and has acquired
3.1 the Impact Factor for the year 2020-21

Anthelion

Director
Anthelion Imapct Factor
www.anthelion.in

∞ Impact Factor: 3.1 ∞

GOVERNMENT OF INDIA
Ministry of Human Resource Development
Department of Higher Education, MHRD
Raja Rammohun Roy National Agency for ISBN

Room No. 13, Jeevandeep Building, 4th Floor, Parliament Street,
New Delhi 110001, Phone No. 011-23369668

Application Reference Number

6968|ISBN|2018|P

1. Name of Publishing Agency	Ayudh Publication
2. Name of Properitor/Director/Author	Rohitkumar Jeevanbhai Parmar
3. Date of Establishment	01/05/2013
4. Nationality	INDIA
5. Mailing Address (Including post Code)	B/4854/A, Doctor House, Kaliyabid, Bhavnagar, Gujarat
6. Email	ayudhpublication2017@gmail.com
7. Publisher's Website	www.ayudhpublication.com
8. Phone (Inclu. Area code)	
9. Mobile	09428343635
10. Fax (Inclu. Area code)	
11. State	GUJARAT
12. District	Bhavnagar
13. Pin code	364002
14. Publishing Fields	
15. Application Title	

Science & Tech | Philosophy | Religion | Social Sciences | Literature | Arts | Educational Books | School/Children Books | Pure Science | Ideology

Scanned with OKEN Scanner

Ayudh Publication
For - Book Publish – ISBN
(Approved by – MHRD, Govt. of India)
Ayudh Journal – ISSN 2321 : 2160 (Since May-2013)
Surabhi Journal – ISSN 2349 : 4557 (Since June-2014)

सहयोग राशि :

- * एक प्रति : *200/-*
- * व्यक्तिगत वार्षिक : *2000/-*
- * संस्थागत वार्षिक : *3000/-*

संपादन/संचालन :

- पत्रिका अवैतनिक और अव्यावसायिक है ।
- रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार है ।
- संशोधन प्रपत्र व आलेखों से विशेषज्ञ समीक्षा समिति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।
- संशोधन प्रपत्र व आलेखों पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाता ।
- लेखकों, सदस्यों एवम् मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है ।

Contact :
Ayudh Publication,
Bhavnagar, Gujarat
ayudh2020@gmail.com
www.ayudhpublication.com
9428 34 36 35 / 91069 42482

Peer Review Process
1st Phase

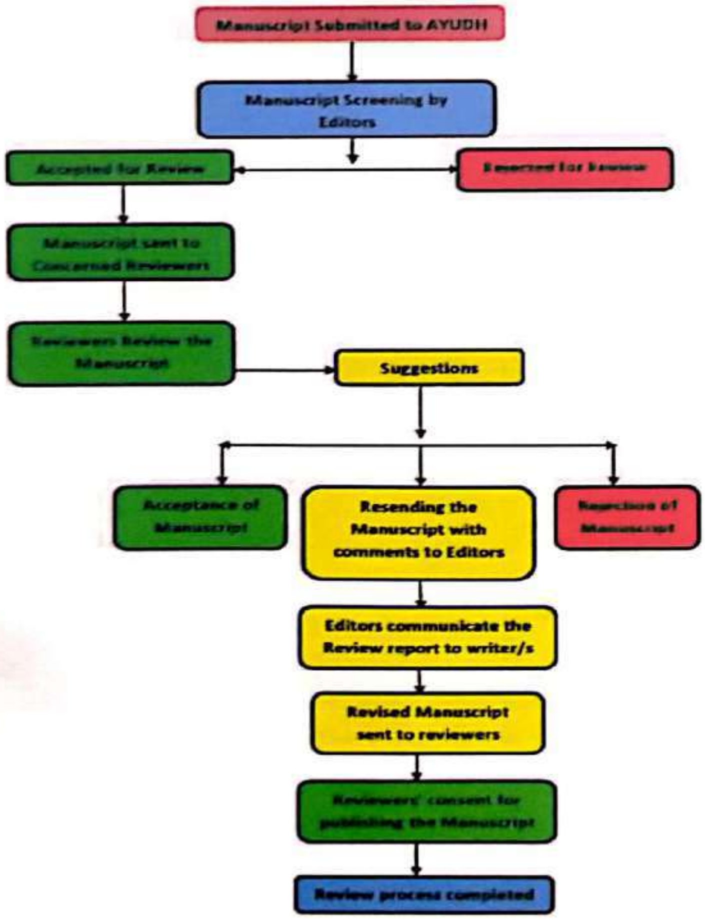

The same process will come in effect in 2nd phase and then finally paper goes for publication after double blind peer-reviewed process.

Scanned with OKEN Scanner

16. Collaborative learning – As a Paradigm of New Forms in Education: Critical Assessment of Individual and Collaborative learning workout Examples on Problem-Solving transference and Cognitive load
Mr. Harihar C. Patel 81

17. જામનગર શહેરના અધ્યાપકોનો ગ્રંથાલય વાંચનરસ : એક અધ્યયન
Vijay R. Joshi 86

18. જીવનશિક્ષણમાં પ્રવાસ દ્વારા જીવનની મુસાફરી અને "પૂર્વોત્તર" માં સર્જકનું ઐશ્વર્ય દર્શન
જયદીપભાઇ જમસીભાઇ ચૌધરી 91

19. A study of Stress Management and Effective Relaxation Technique
Trupti V. Vala 94

20. CUSTOMERS' PERCEPTION RELATED TO BANK OFFICIAL'S BEHAVIOUR TOWARDS THEM AT SELECTED BANKS IN UNION TERRITORY OF DADRA AND NAGAR HAVELI
Dipankar Prajapati & Dr. B. P. Bhuva 100

21. The place of god in Yog Darshan
Dr. Parth S. Sharma 105

22. KANT'S COPERNICAN REVOLUTION- AN EVALUATION
Nidhi B. Kalani 107

23. SWARUP LAKSHAN OF BRAMH AND ONOLOGICAL EVALUTION
Dakshesh G. Vadher 109

24. માનવ ચિત્તની સૂક્ષ્મ લાગણી–વૃત્તિઓનું નિરૂપણ
ડૉ. દિલીપ આર. અમીન 111

25. ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'सलाम' कहानीसंग्रह में व्यक्त आधुनिक सामाजिक जीवनबोध
जितेषकुमार के. बारैया 113

Ayudh Publication
Since 2013

Scanned with OKEN Scanner

જામનગર શહેરના અધ્યાપકોનો ગ્રંથાલય વાંચનરસ : એક અધ્યયન

Vijay R. Joshi
Research Scholar,
B. K. N. M. University – Junagadh

Dr. Mital P. Manavadaria
Research Guide
B. K. N. M. University – Junagadh

સારાંશ :

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં જામનગર શહેરના અધ્યાપકોનો ગ્રંથાલય વાંચનરસ જાણવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવ્યો છે. અભ્યાસમાં જામનગર શહેરની ૧૦ કોલેજના ૧૩૨ અધ્યાપકોને રૂબરૂ મુલાકાત દ્વારા પ્રશ્નાવલિ આપી માહિતી એકત્રીત કરવામાં આવી છે. અભ્યાસના મુખ્ય હેતુઓમાં અધ્યાપકો વાંચન માટે ગ્રંથાલયની મુલાકાત લે છે કે નહિ તે જાણવું તેમજ વાંચન માટે ગ્રંથાલયની મુલાકાત કેટલા સમય માટે લે છે. તેમના વાંચનના હેતુઓ અને પ્રોત્સાહક પરિબળો ક્યાં છે અને તેમના વાંચન માટેના અવરોધોની જાણકારી મેળવવી વગેરેનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે. આ ઉપરાંત અભ્યાસમાં વાંચનરસ અને તેનું મહત્વ, અભ્યાસનું કાર્યક્ષેત્ર, અભ્યાસની મર્યાદા, સંશોધન પદ્ધતિ, પ્રાપ્ત માહિતીનું પુથક્કરણ અને અર્થઘટન, તારણો અને સૂચનોનો સમાવેશ કરવામાં આવ્યો છે.

ચાવીરૂપ શબ્દો : વાંચનરસ, જામનગર શહેરના અધ્યાપકો, કોલેજ ગ્રંથાલય,

૧. પ્રસ્તાવના :

પવર્તમાન સમયમાં કોઈપણ શૈક્ષણિક સંસ્થામાં માહિતી મેળવવા માટેનું મહત્વનું અંગ તે સંસ્થાનું ગ્રંથાલય છે. ગ્રંથાલય સંસ્થા માટે જ્ઞાનની ગંગોત્રી અને સંસ્કારનું ધામ છે. માહિતીના પ્રચંડ વિસ્ફોટમાં જ્ઞાનની વાત આજે ફંટાઈ જતી જોવા મળે છે. શિક્ષણને અસરકારક બનાવવા માટે ગ્રંથાલય અને અધ્યાપકો મહત્વનો ભાગ ભજવે છે. વર્તમાન સમયમાં અસંખ્ય પુસ્તકોનુ પ્રકાશન થાય છે, માહિતીનો ઝડપી વિકાસ થાય છે અને માહિતી દ્વારા જ સંશોધન કાર્ય થાય છે. ગ્રંથાલયો માહિતીનો સંગ્રહ, વિસ્તરણ અને પ્રસારણનું કાર્ય કરે છે. તેથી ગ્રંથાલયોને માહિતી વિસ્ફોટમાં કઈ રીતે સમૃદ્ધ બનાવી તથા તેના ઉપયોગ કર્તાઓને કઈ રીતે સંતોષી શકાય તે માટે પણ ગ્રંથાલયક્ષેત્રે સતત સંશોધન અનિવાર્ય છે.

૨. વાંચન અને તેનું મહત્વ :

કોઈપણ વ્યક્તિ શાળા કે કોલેજમાં અભ્યાસ કરવાથી શિક્ષિત બનતો નથી. આવી સંસ્થાઓમાં વ્યક્તિ જે કઈ જ્ઞાન મેળવે છે, એ સમય જતા જુનું થઈ જાય છે. જ્ઞાનમાં કોઈપણ વ્યક્તિએ અભ્યાસ પૂરો કર્યા પછી પોતાના વ્યવસાયને લગતું સાહિત્ય વાંચવું જોઈએ. ખરેખર તો વ્યક્તિએ પોતાના સમયનો ૧૦ ટકા સમય વાંચન માટે આપવો જોઈએ. તો જ પોતાની જાતને નવા જ્ઞાનથી પરિચિત રાખી શકે જો એ પ્રમાણે ન કરે તો જીવનમાં કે વ્યવસાયમાં પાછળ રહી જવાની પૂરી સંભાવના છે.

જોહ્ન જે ડેબોર (John. J. Deboer)ના મતે "વાંચન એ અર્થ સંશોધવાની અને પ્રાપ્ત કરવાની સક્રિય પ્રક્રિયા છે." પ્રક્રિયાની રીતે જોઈએ તો વાંચન એ વાંચ્ય સામગ્રીના અક્ષરો, શબ્દો, ચિત્રો, પ્રતીકો કે સંજ્ઞાની આંખ દ્વારા ઝીલાયેલી છબી મગજમાં અંકિત થવાની અને તેનો ધ્વનિ (ઉચ્ચાર) સ્પષ્ટ કરવાની અને તેનો અર્થ તારવવાની પ્રક્રિયા છે.

Scanned with OKEN Scanner

International Peer-Reviewed Referred Journal

Ayudh

Impact Factor : 3.5

ISSN - 2321 : 2160

Vol-1

70th Issue

March - 2021

Editor

Mr. Rohit Parmar

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2321-2160

Ayudh

International Peer-Reviewed Refereed Journal

70th Issue | Volume-1 | March-2021

Editor in Chief

Mr. Rohit Parmar

Advisory Committee

❖ Prof. (Dr.) Chetan Trivedi Vice Chancellor Bhakta Kavi Narsinh Mehta University, Junagadh, Gujarat, India	❖ Mr. Kishor Makwana (Senior Journalist, Administrator, Educator, Editor, Writer, Columnist) Ex. Editor - 'Namskar' & 'Sadhna', Founder: Mission BHIM Website, Board Member: Babasahab Ambedakar Open University, Ahmedabad, Gujarat
❖ Prof. H. N. Vaghela (Former Acting V. C.) Professor & Head, Department of Hindi, M. K. Bhavnagar University, Bhavnagar, Gujarat, India	❖ Dr. Chandrakanta K. Mathur Assistant Professor Department of Political Science, Shyama Prasad Mukharjee College, Delhi University, Delhi, India
❖ Mr. Anilkumar J. Raval (Administrator, Educator, Editor, Writer, Columnist) Editor - Sanskar Dipika, Vidya Bharati, Gujarat Prant, Ahmedabad, Gujarat, India	❖ Prof. Jaydipsinh K. Dodiya Professor & Head, Department of English & CLS, Saurashtra University, Rajkot, Gujarat

Editorial Board

❖ Mr. Rohit Parmar Chief Editor Ayudh Publication, Bhavnagar, Gujarat, India	❖ Dr. Jiten J. Parmar (GES-II) Associate Editor Assi. Professor, Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh, Gujarat, India
❖ Dr. Dilip B. Kataliya (GES-II) Section Editor Assi. Professor, Government Science College, Mandavi, Kachchha, Gujarat, India	❖ Ms. Surabhi A. Parmar (GES-II) Section Editor Assi. Professor, Government Arts College, Mandal, Ahmedabad, Gujarat, India

Scanned with OKEN Scanner

Valid up to 24/05/2021

Anthelion Impact Factor

Certificate of Acknowledgement

This is to certify that AYUDH (International Peer-Reviewed Refereed Journal)
P-ISSN: 2321-2160 E-ISSN: XXXX-XXXX Formerly UGC Approval No. 47772
has been reviewed and evaluated by our reviewers.
The journal has gone under the Blind Peer Review and has acquired
3.5 the Impact Factor for the year 2020-21

Anthelion

Director
Anthelion Imapct Factor
www.anthelion.in

https://anthelion.in

∞ Impact Factor: 3.5 ∞

GOVERNMENT OF INDIA
Ministry of Human Resource Development
Department of Higher Education, MHRD
Raja Rammohun Roy National Agency for ISBN

Room No. 13, Jeevandeep Building, 4th Floor, Parliament Street,
New Delhi 110001, Phone No. 011-23369668

Application Reference Number

6968|ISBN|2018|P

1. Name of Publishing Agency	Ayudh Publication
2. Name of Properitor/Director/Author	Rohitkumar Jeevanbhai Parmar
3. Date of Establishment	01/05/2013
4. Nationality	INDIA
5. Mailing Address (Including post Code)	B/4854/A, Doctor House, Kaliyabid, Bhavnagar, Gujarat
6. Email	ayudhpublication2017@gmail.com
7. Publisher's Website	www.ayudhpublication.com
8. Phone (Inclu. Area code)	
9. Mobile	09428343635
10. Fax (Inclu. Area code)	
11. State	GUJARAT
12. District	Bhavnagar
13. Pin code	364002
14. Publishing Fields	
15. Application Title	

Science & Tech | Philosophy | Religion | Social Sciences | Literature | Arts | Educational Books | School/Children Books | Pure Science | Ideology

Scanned with OKEN Scanner

Ayudh Publication
For - Book Publish – ISBN
(Approved by – MHRD, Govt. of India)
Ayudh Journal – ISSN 2321 : 2160 (Since May-2013)
Surabhi Journal – ISSN 2349 : 4557 (Since June-2014)

सहयोग राशि :

* एक प्रति : *200/-*
* व्यक्तिगत वार्षिक : *2000/-*
* संस्थागत वार्षिक : *3000/-*

संपादन / संचालन :

- पत्रिका अवैतनिक और अव्यावसायिक है ।
- रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार है ।
- संशोधन प्रपत्र व आलेखों से विशेषज्ञ समीक्षा समिति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।
- संशोधन प्रपत्र व आलेखों पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाता ।
- लेखकों, सदस्यों एवम् मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है ।

Contact :
Ayudh Publication,
Bhavnagar, Gujarat
ayudh2020@gmail.com
www.ayudhpublication.com
9428 34 36 35 / 91069 42482

Peer Review Process
1st Phase

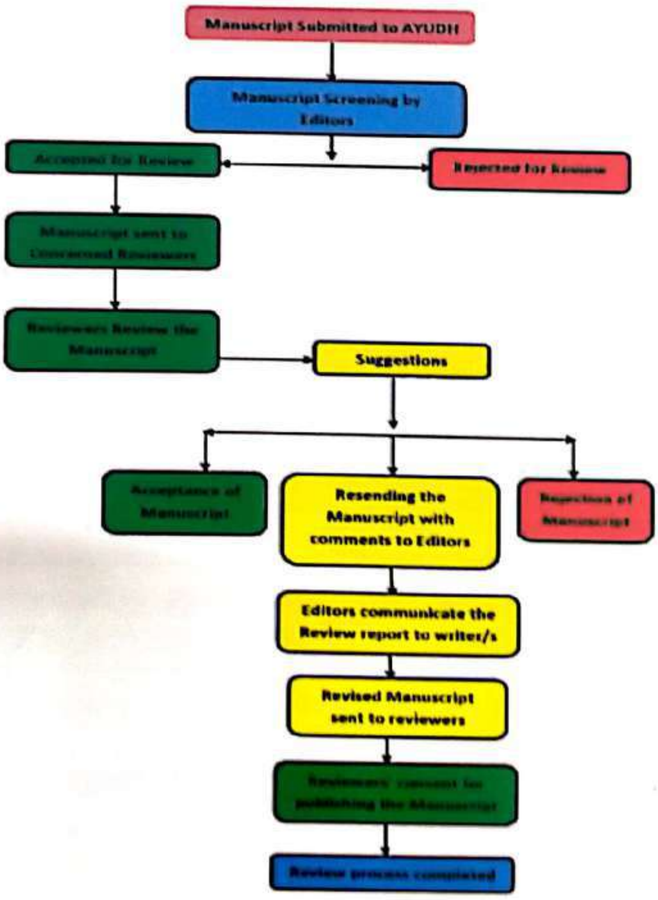

The same process will come in effect in 2nd phase and then finally paper goes for publication after double blind peer-reviewed process.

INDEX

1. Less Discussed Ethical Concerns in Sport
Dr. Nirav Vasavada..1

2. A study of the Educational Achievement of secondary school students in relation their intelligence and Achievement
Hetal V. Surani & Dr. Kamalnayan B. Parmar..7

3. FRAMEWORK FOR FITNESS PSYCHOLOGY
Psychology Issues for Fitness Participants and Professionals
GOPALBHAI RAMBHAI BARAD..12

4. An Analytical Study on Performance of Selected Fertilizer Companies by using Data-Envelopment Analysis Model
Harsha Ramani..20

5. Sustainable Management of Water Resources in Agriculture
Poonam R. Patel..28

6. Educational Migration: Making of Indian Diaspora
Miss. Shraddha P. Sisodiya..32

7. Information Seeking Behaviour of the Students at Shri A. K. Doshi Mahila College Jamnagar: A Survey
Vijay R. Joshi..36

8. A STUDY OF SCIENTIFIC APTITUDE IN RELATION TO GENDER, EDUCATIONAL ACHIEVEMENT AND ACADEMIC STREAM AT HIGHER SECONDARY LEVEL
Kamlesh R. Patel..43

9. STUDY OF PROBLEM FACED BY CANDIDATE WHO ARE PREPARING FOR THE COMPETATIVE EXAM DURING CORONA PANDEMIC
Dr. Jayeshkumar D. Patel..52

10. यथार्थ की धारा पर बहती 'कागज की नाव' नासिरा शर्मा
श्रीमती शशिकला और डॉ. गिरीश चंद्र पंत..54

11. तुलसी काव्य का मूल्यांकन और विश्वनाथ त्रिपाठी
भरतकुमार पी. वणकर..57

12. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लघुकथाओं में नारी विमर्श
धर्मेन्द्रकुमार एच. राठवा..61

13. आदिवासी समुदाय का जंगल के साथ संबंध
गीता बी. गामेती और डॉ. सुभाष पांडर..68

Scanned with OKEN Scanner

Information Seeking Behaviour of the Students at Shri A. K. Doshi Mahila College Jamnagar: A Survey

Vijay R. Joshi
Research Scholar,
B. K. N. M. University - Junagadh
E-mail : vijayjoshi.210@gmail.com

Dr. Mital P. Manavadaria
Research Guide,
B. K. N. M. University - Junagadh
E-Mail : isbnmitalpatel@gmail.com

Abstract:

The present study investigates the information seeking behavior of the students of Shri A. K. Doshi Mahila College – Jamnagar. Data was collected through structured questionnaires. The study investigates the information seeking behavior of the students used regularly to meet their informational needs, purpose of information seeking, use of Library Services for seeking the information, problems faced by Students while seeking information.

Keywords: Information Seeking Behavior, Students, Library.

Introduction:

Information is recognized as a vital source indispensable for the development of the individual and the society. Exponential growth of information and its availability in various channels and formats leads to the problem of retrieving and dissemination. The information flow on all sides brought changes in the users" information needs and seeking behavior. The changing information needs of the user exert pressure in information dissemination process. Understanding the information needs of library clientele is necessary for planning and providing high quality library services as well as to avoid misallocating resources. Therefore, to keep pace with the changing information need, information centers have to use the modern technologies and introduce newer information systems for retrieval and dissemination process.

Libraries and information centers play a major role in information transfer cycle. The role of The College Libraries is not only limited to the preservation of reading materials but also to Ensure that the information needs of the users are met by its own traditional as well as electronic resources and services.

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

International Peer Reviewed Multilingual Research Journal

Issue-38, Vol-03 April to June 2021

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2021
Issue 38, Vol-03

Date of Publication
01 April 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

Date of Publication
01 April 2021

Vidyawarta™
International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता .कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT FACTOR 7.940 iijif

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

26) महर्षि दयानन्द सरस्वती की दार्शनिक विचारधारा एवं सामाजिक सुधार ...
डॉ० यतेन्द्र पाल गौड़, मेरठ (उ०प्र०) ||106

27) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के शिक्षा से सम्बन्धीत विचार वर्तमान परिस्थितियों ...
डॉ. कुंभन खण्डेलवाल & नयन इंगले, इन्दौर म.प्र. ||113

28) भारत के फुटकर व्यापार क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभाव
डॉ. अर्चना बी. जैन, गोंदिया ||116

29) वागर्थ : आलेख : महत्त्व और विशिष्टता
डॉ. जगदीश गिरि & मन्जु लता, जयपुर ||121

30) डर, चिंता और खेल प्रदर्शन — एक विश्लेषण
डॉ. अरूण कुमार नायक, अम्बिकापुर (छ.ग.) ||126

31) न्यूनतम समर्थन मुल्य(MSP) के संदर्भ में तिरोडा(जि: गोंदिया) तहसील के ...
प्रा.डॉ. ए.बी. पटले, नागपूर ||128

32) प्रवासी हिंदी काव्य में भारतीयता
प्रा. डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे, जि. जलगाँव ||133

33) विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में कस्बाई परिवेश
डॉ. नजमा एम. अंसारी, जामनगर ||136

34) इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिन्दी कहानियों में चित्रित राजनीतिक समस्या
डॉ. वाला मनिषा एम., राजकोट ||141

35) कृष्णा सोबती और भीष्म साहनी के उपन्यासों में साम्प्रदायिकता और विभाजन ...
मेहता लीना वी., राजकोट ||147

36) हिन्दी साहित्य का इतिहास : पुनर्लेखन की समस्याएँ
डॉ. व्यास निलेशकुमार डी., बडौदा ||159

37) भौगोलिक शोध में कम्प्यूटर की उपयोगिता
डॉ.मलखान सिंह, विदिशा (म.प्र.) ||162

38) संस्कृत साहित्य की दृष्टि में रहस्यवाद
डॉ. तेजनाथ पौडेल, जम्मू ||165

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com
Scanned with OKEN Scanner

33

विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में कस्बाई परिवेश

डॉ. नजमा एम. अंसारी
आसिसटन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, भवन्स,
श्री ए. के. दोशी महिला कॉलेज, जामनगर

****

समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में विनोदकुमार शुक्ल का अपना विशिष्ट स्थान है । उनके उपन्यासों की केन्द्रीय संवेदना कस्बाई परिवेश में स्थित निम्नवर्गीय जीवन का यथार्थ है । उनके नौकर की कमीजए, खिलेगा तो देखगेंए और ञदीवार में एक खिडकी रहती थीए इन तीनों उपन्यासों में कस्बाई-जीवन चेतना और कस्बाई जीवन के यथार्थ को उद्धाटित किया गया है । उनका पहला उपन्यास ञनौकर की कमीजए है, जो निम्नवर्गीय परिवार को केन्द में रखकर लिखा गया है । केन्द्रीय कथा सरकारी कार्यालय के क्लार्क के जीवन का उद्घाटन करती है । द्वितीय उपन्यास ञखिलेगा तो देखेंगेए में गांव से कस्बा बनते परिवेश में स्थित स्कूल के गुरूजी को केन्द में रखकर लिखा गया है । तृतीय उपन्यास ञदीवार में एक खिडकी रहती थीए को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । इस उपन्यास में कस्बों में खुले निजी महाविधालय के अस्थायी अध्यापक के समाजार्थिक पहलुओं को उजागर किया है । विनोदकुमार शुक्ल कृत हिन्दी में महत्त्वपूर्ण ञनौकर की कमीजए, ञखिलेगा तो देखेंगेए और ञदीवार में एक खिडकी रहती थीए इन उपन्यासों का केन्द्रीय कथ्य सामाजिक संरचना का नया रूप कस्बा इस ईकाई का है । उनके उपन्यासों में निम्नवर्ग और कस्बाई जीवन को देखते समय उपन्यासों में प्रस्तुत केन्द्रीय परिवेश को परखना महत्त्वपूर्ण लगता है ।

विनोदकुमार शुक्ल कृत ञनौकर की कमीजए उपन्यास का केन्द्रीय परिवेश कस्बाई संरचना का है । यह कस्बाई संरचना स्वातंत्र्योत्तर भारत में आरंभ हुई नगरीकरण की प्रक्रिया एवं औद्योगिक विकास के कारण निर्मित छोटे शहर के रूप में प्रस्तुत हुई है । स्वातंत्र्योत्तर भारत में कस्बे की पहचान छोटे-छोटे होटल, अस्पताल, तहसील, नगरपालिका, सिनेमाघर, बाजार का स्थान आदि के होने से होती रही है । उपन्यास में इन सारे तथ्यों को पाया जाता है । उपन्यास में चित्रित ञकस्बाई परिवेशए एक ऐसे छोटे शहर का है, जिसे आधे घंटे में पार किया जा सकता है ।

कस्बाई परिवेश का चित्रण करते हुए विनोदकुमार शुक्ल ने ञनौकर की कमीजए का प्रमुख चरित्र संतू के द्वारा ऐसे दृश्य प्रस्तुत किये हैं, जो कस्बे के भूगोल या रचना का परिचय देते हैं । उपन्यास के आरंभ में संतू को छुट्टी होने के कारण वह बार-बार घर से बाहर निकलता है । उसे बाहर अपने बचपन के दोस्त संपत के मिलने की उम्मीद है, लेकिन संपत नहीं मिलता । संतू अपने ही विचारों में मग्न होकर कस्बाई परिवेश को बतलाता जाता है- अब अनंत काल तक घर न लौटने के लिए क्या किया जा सकता है ? मेरे पास यह छोटा शहर बचा था, जिसे मैं आधे घंटे में पैदल पार कर सकता था ।१ समयानुसार विकसित संरचना में जिस तरह कस्बे को छोटे शहर के रूप में पहचान प्राप्त हुई है । उस पहचान के अनुरूप यह कस्बाई शहर है ।

कस्बानुमा शहर का सूक्ष्म अवलोकन विनोदकुमार शुक्ल ने किया है । इसमें होटल, अस्पताल, बाजार का स्थान, लालबाग, चांदमारी, गुप्ता की दुकान, सिनेमाघर, शराब की दुकान आदि तथ्यों का उद्घाटन उपन्यास में किया गया है । संतू जिस गली में रहता है, उस गली के खत्म होते ही शराब की दुकान है । वहाँ एक बल्ब लगा हुआ है । दुकान के पास एक बडी सिगडी जलती रहती है, जहाँ भजिये तले जाते हैं । उसके आगे सतनामियों का मुहल्ला है । वहाँ बिना बल्ब के एक बिजली का खम्भा है । कस्बे में मुंगफली बेचनेवाले, चाटवाले और खोमचे लगानेवाले लोग भी रहते हैं । एक तरह से कस्बाई परिवेश को सजीवता ही प्राप्त हुई है । यहाँ विनोदकुमार शुक्ल कस्बाई बस्ती का दृश्यतक खिंचने में चुकते नहीं । इक्की-दुक्की झोपडियों में कंदील या ढिबरी का उजाला था । खुले मैदान में

Scanned with OKEN Scanner

एक तरफ और उजाला था । वह उजाला सार्वजनिक शौचालय का था । इसलिए उसका उजाला गंदा पीला और पारदर्शी लगता था । मैदान में जगह-जगह म्युनिसिपैलिटी के कचरे के ढेरी थी ।२ यह चित्र कस्बाई लोगों की वह बस्ती का प्रमाण है जहाँ शहर की बाजू में झुग्गी-झोपडियों में निम्नवर्गीय लोगों का बसेरा है । उनको-शहरी सुविधाओं के होते हुए भी असुविधाओं की जिंदगी बसर करनी पडती है । उपन्यास में कस्बाई जीवन की विसंगतिपूर्ण छवि उभर जाती है ।

संतू के मकान के पास एक सिनेमा घर है । जहाँ मनोरंजन किया जाता है । सिनेमा घर की बाजू में ही बाजार का ठिकाना है । इसी शहर में कुंदरापारा से आगे मुख्य सडक है । वह पक्की सडक से बना राष्ट्रीय मार्ग नंबर छः था । उपन्यास में संतू के दफ्तर को लेकर जो दृश्य बताये गये हैं, वह भी कस्बाई परिवेश के पुराने जमाने में बनायें गए बंगले का है । बंगले के पीछे मुख्य कार्यालय की नयी बिल्डिंग बनी है । जो कस्बे के विकासमान स्वरूप की ओर संकेत करती है । पुराना बंगला और नई बिल्डिंग के बीच में पीर का मजार है । इस पीर के मजार पर शुकवार के दिन कवाली गान होता था । संतू के कार्यालय को भी कस्बाई स्वरूप प्राप्त होने से बाजार को आनेवाले लोगों की तरह देहातियों, टाँगेवालों, रिक्शेवालों की वहाँ भीड होती है । इन लोगों ने तो पीर मजार की वजह से दफ्तर को मजारवाला दफ्तर नामक पहचान दी है ।

कस्बानुमा शहरों की आधुनिक पहचान सदर बाजार, म्युनिसिपल स्कूल, महाविद्यालय, व्यापारियों के छोटे-छोटे दुकान, डॉक्टरों के निजी अस्पताल आदि के होने से होती है । उसी तथ्यों को जुटाते हुए कस्बाई माहौल का चित्रण उपन्यासकार ने किया है- सदर बाजार की शुरूआत कोतवाली से होती थी । फिर कपडे, सर्राफि, दवाइयों की दुकाने थीं, बीडी-कारखाने की दो-तीन गद्दियाँ और कपडे की थोक दुकाने इत्यादी सडक के दोनों ओर थीं । आमतौर पर सामने दुकान, पीछे एक गोदाम और उपर रहना होता । दो-मंजिले से कम एक भी मकान नहीं था ।...... इस रास्ते में आगे म्युनिसिपल स्कूल और एक महाविद्यालय था, तमेरों के घर के बाद दो किताबों की, दो डाक्टर की और कई बर्तनों इत्यादि की दुकाने थी ।३ कस्बाई परिवेश की विशेषता होती है की, यहाँ बाजार हो, दुकाने हो, जहाँ लोग अपनी जीवनावश्यक वस्तुओं की पूर्ति करने के लिए इकट्ठा होते है । यह सदर बाजार इसी पूर्ति का स्थान है । वर्तमान समय के विकसित शहरों की सीमारेखा निश्चित करना वैसा मुश्किल होता है, लेकिन शुक्लजी ने दोनों के बीच की सरहद का सूक्ष्मता से अंकन किया है । जैसे शहर की सीमा के खत्म होने और वहाँ से कस्बाई बस्ती के आरंभ होने का ठिकाना यह गौराह बाबू का घर से मिलता है । बिना शहर लौटे बाहर ही बाहर गौराह बाबू अपने घर लौट सकते थे क्योंकि उनका घर शहर की सीमा में था । अपने घर से एक कदम बाहर रखते ही वे शहर से बाहर हो जाते ।४ यह घर ऐसी जगह है जहाँ से पीछे मुडे तो झुग्गी- झोपडीयों में रहनेवाले लोगों की कस्बाई बस्ती है और आगे निकले तो शहर की शुरूआत होती है । इस तरह का कस्बाई परिवेश उपन्यास की कथा का केन्द्र है ।

नौकर की कमीजए के बाद सत्रह साल का दीर्घ अंतराल लेकर सन् १९९६ ई. में विनोदकुमार शुक्ल ने खिलेगा तो देखेंगेए उपन्यास का सृजन किया । यह उपन्यास बहुत चर्चित रहा । उपन्यास एक ऐसे परिवेश को केन्द्र बनाकर लिखा गया है, जहाँ के पिछडे अंचलों में कस्बाई संस्कारों से युक्त नव चेतना विकासोन्मुख है । कस्बाई संरचना पूरे अंचल में उद्योन्मुख हो रही है । कथा के केन्द्र में गांव है और उस गाँव के स्कूल मास्टर गुरूजी का परिवार है । लेकिन यह गांव अपने आसपास के इलाकों में हो रहे औद्योगिक विकास, औद्योगिक क्षेत्र-विस्तार एवं यातायात की सुविधाओं में हो रही कांति के कारण कस्बा बनने की प्रकिया में अग्रेसर है । जिस गांव को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है वहाँ एक ग्रामसेवक का क्वार्टर है । जिसमें कभी-कभार ग्रामसेवक आता है । एक पुलिस थाना है, जो पिछले डेढ साल से खाली पडा है । उपन्यास के आरम्भ में ही बताया गया है- गांज में केवल दो पक्के मकान थे एक ग्रामसेवक का क्वार्टर और दूसरा पुलिस थाना । झोपडियों की तुलना में दोनों भव्य लगते थे ।५

देश आजादी के बाद सामाजिक संरचना निरन्तर बदलती गयी है । लोग अपनी जीवनावश्यक वस्तुओं

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

Vidyawarta™

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Issue-39, Vol-04, July to Sept. 2021

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

July To Sept. 2021
Issue 39, Vol-04

Date of Publication
01 July 2021

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

Date of Publication
01 July 2021

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता® .कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.940 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

14) The study of Handloom industryIn20th century
Prof. Laxmiprabha Ughade, Ahmednagar ||65

15) YOGA FOR HEALTHY LIFE
Dr. Prafull Prakash Varale, Murtujapur Dist. Akola. ||67

16) Road Safety and Sustainable Development (Need of man)
Principal Dr. Shaikh S. J., Amalner, Tal. Amaner, Dist. Jalgaon ||68

17) FROM INVISIBILITY TO FRONTLINE WARRIORS: WOMEN AND THE ......
Dr. Sushila Ramaswamy, Chanakyapuri, New Delhi ||71

18) THE INDIAN SCENARIO OF GENDER BASED VIOLENCE
Lalit Kumar Dayal ||80

19) निवडक कथालेखिकांच्या नव्वदोत्तरी ग्रामीण कथांचे स्वरुप
प्रा. छाया भगवान शिंदे, कोपरगाव, जि. अहमदनगर. ||86

20) माहिती साक्षरता
डॉ. विलास अशोकराव काळे, पूर्णा (जं.), जि. परभणी ||89

21) गांधीजी आणि ग्रामस्वराज्य
डॉ. अतुल पद्माकर खोसे, शिरपूर, जिल्हा धुळे ||92

22) स्थलांतराचे अर्थशास्त्र
डॉ. जयश्री पुरूषोत्तम सरोदे, भुसावळ ||94

23) डॉ. सदानंद देशमुख यांच्या कवितेतील स्त्री चित्रण
पुष्पा सुनिल जाधव, ठाणे (प) ||99

24) हिन्दी की बाल कहानियों में नैतिक शिक्षा
रमा तोमर, ग्वालियर (म.प्र.) ||103

25) महिला कहानीकारों की रचनाओं में परिवर्तन की विविध दिशाएँ
डॉ. नज़मा एम. अंसारी, जामनगर ||108

26) राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की नामांकन की स्थिति......
योगेश मैनाली, नैनीताल, उत्तराखण्ड ||115

http://www.printingarea.blogspot.com | http://www.vidyawarta.com/03

Scanned with OKEN Scanner

९— बच्चन सिंह—आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास लोकभारती प्रकाशन—प्रयागराज, संस्करण —२०१९, पृ.— १२३

१०— आ. रामचन्द्रशुक्ल—हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन — नई दिल्ली, संस्करण — २०१०, पृ.—३८५

११— दोषी एस. एल., जैन. पी. सी. —समाज शास्त्र नई दिशाएँ, प्रकाशन—जयपुर दिल्ली, संस्करण २००९, पृ.—२३९, २४०

१२— अमरनाथ—हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, प्रकाशक— राजकमल प्रका. नई दिल्ली संस्करण— २०१२, पृ.११८

❑❑❑

25

महिला कहानीकारों की रचनाओं में परिवर्तन की विविध दिशाएँ

डॉ. नज़मा एम. अंसारी
हिन्दी विभाग,
श्री ए के दोषी महिला कॉलेज, जि. जामनगर

****

हिन्दी कहानी का आरम्भ वास्तव में सन् १९९० से ही माना जा सकता है, इस समय तक पहुँचते—पहुँचते भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पाश्चात्य संस्कृतित और साहित्य से पूर्णरूपेण सामंजस्य स्थापित कर चुका था। फलत: हिन्दी कहानी के कथ्य और शिल्प में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। पाश्चात्य कहानी—कला से अनुप्राणित आधुनिक कहानी अलौकिक, अभौतिक रूप से हटकर शुद्ध रूप में भौतिक एवं मानवीय जीवन का चित्रण उपस्थित करने लगी।

'समय की गति, पुरूषों का प्रभुत्व सामाजिक—राजनीतिक व्यवधान आदि अभी तक नारी को स्वतन्त्र रूप से कहानी के रूप में अभिव्यंजना का अवसर नहीं प्रदान कर सके थे। सन् १९०० तक पहुँचते—पहुँचते बुद्ध समाज, आर्य समाज, इण्डियन नेशनल क्रांग्रेस के सामाजिक एवं राष्ट्रीय आन्दोलन ने भारतीय नारी के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया था। नारी में सामाजीकरण की भावना बढ़ रही थी, नारी ने सामाजिक—राजनीतिक क्षेत्रों के साथ—साथ साहित्य में भी पुरूषों द्वारा रचित कहानी—साहित्य की विशालता तथा गहनता के समक्ष नारी द्वारा रचित साहित्य कम ही है, पर हिन्दी कहानी के विकास में उसका महत्व कम नहीं।'[१] सन् १९२२—२३ में 'चाँद' और 'माधुरी' पत्रिकाओं का प्रकाशन विशेषता नारी के साहित्यिक और बौद्धिक विकास को व्यावहारिक और क्रियात्मक बनाने के उद्देश्य से किया गया। परिणामस्वरूप सन् १९२२ में अनेक कहानी लेखिकाओं की कहानियाँ समय—समय पर विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी।

Scanned with OKEN Scanner

कहानी भी अपने समय का प्रतिबिम्ब होती है। अधिकतर कहानियाँ वैसी ही होती है जो उस समय के समाज में घटित हो रहा होता है। बंग महिला ने 'चन्द्र देव से मेरी बातें' में जो उस समय देश में बेरोजगारी और अराजकता फैली थी उसका वर्णन किया है। दूसरी कहानी 'कुंभ' में छोटी बहूँ' में कुंभ स्नान का महत्व बताया है। उस समय में कुंभ में स्नान करना बहुत बड़े पुण्यों में से एक समझा जाता था।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कहानियों में बाल विधवा के जीवन की कठिनाईयों का वर्णन किया है। क्योंकि उस समय बाल विवाह व अनमेल विवाह की प्रथा थी। जिसके कारण छोटी–छोटी बालिकाओं को दारूण दु:ख सहन करना पड़ता था। बिखरे मोती के 'विनीत निवेदन' में सुभद्रा जी ने लिखा था।

'कुरूढ़ियों और सामाजिक बन्धनों की शिलाओं पर अनेक निरपराध आत्माएँ प्रतिदिन ही चूर–चूर हो रही है। किन्तु उनके हश्दय बिन्दु जहाँ–तहाँ मोतियों के समान बिखरे पड़े हैं। मैंने तो उन्हें केवल बटोरने का ही प्रयत्न किया है और अन्याय के प्रति क्षोभ भी।'[२] इनकी कहानियाँ प्रेम, स्त्रीमात्र के सामान्य भाव, विधवाओं के दु:ख–दर्द और राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति का अंकन किया गया है।

रशीदजहाँ ने मुस्लिम समाज की स्त्रियों के जीवन का नग्न यथार्थ खोलकर रख देने का अपूर्व साहस दिखाया था। इनकी कहानियों में पहली बार यथास्थितिवाद तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था से मुठभेड़ करती स्त्री का तीखा बिम्ब प्रस्तुत हुआ था। 'वकार नासिरी के अनुसार, रसीदजहाँ उर्दू की पहली कहानीकार है जिन्होंने नारी की स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया है। वह पहली कलमकार है जिन्होंने एक बागी दिलो–दिमाग रखने वाली औरत की तस्वीर पेश की है। जिसकी आत्मा और संघर्ष आखिरदम तक शिकस्त मानने को तैयार नहीं। उनकी कहानियों ने पर्दे में रहने वाली औरत को पर्दे के बाहर लाकर खड़ा कर दिया है ताकि इस समाज में औरत पर होते हुए अत्याचार की असली सूरत दिखायी दे। औरत की मानसिक हीनता, पराजय और बेबसी के एहसास को उन्होंने हर कहानी में प्रस्तुत किया है।'[३]

सुमित्रा कुमारी सिन्हा ने वक्त के साथ बदलते समय के साथ उन्होंने अभूतपूर्व साहस के साथ, विवाहिता स्त्री के परकीय प्रेम की वकालत की है।

चन्द्रकिरण के लेखन काल में भी बाल वैधव्य हिन्दू समाज का एक पैशाचिक सच था। परन्तु आर्य समाज ने इस दिशा में बदलाव की पहल की थी। लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों की चेतना को झकझोरने का प्रयास किया है।

'यदि हम इन महिला कहानीकारों की कहानियों पर विहंगम दृष्टि डालें तो देखेंगे कि कहानीकार के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान पर पुरूष प्रधान व्यवस्था और परम्परागत नारी संहिता का दबाव बहुत अधिक दिखायी पड़ता है। उनकी कहानियाँ यथास्थिति को अस्वीकार करती हुई भी विद्रोह का तेवर नहीं अख्तियार करती। उनकी तुलना में होमवती देवी और सुमित्रा कुमारी अधिक साहस का परिचय देती है। और प्रेम, विवाह और स्त्री के लिए निर्धारित नैतिक संहिता पर अधिक खुली दृष्टि से विचार करती है। आर्य समाजी परिवार की सदस्य होने के कारण चन्द्रकिरण जी पर मनुवादी संहिता का दबाव अपेक्षाकृत कम था। इसके बावजूद मध्यवर्गीय बन्दिशों से वे पूर्णत: मुक्त नहीं थी। इनके बरक्स रशीदजहाँ अपनी कहानियों में महाकाली छिन्नमस्ता की तरह समकालीन नारी के पक्ष में खड़ी होती है और पुरूषवादी व्यवस्था के प्रहारों का सामना करती है। उनसे कुछ कम पर पर्याप्त, साहस के साथ सुमित्रा कुमारी सिन्हा भी अपनी कहानियों में समकालीन स्त्री के सवालों को उठाती है और उन्हें भी परम्परावादी पुरूष आलोचकों के प्रहार का शिकार होना पड़ता है।'[४]

उषा प्रियंवदा की कहानियों में अधिकतर स्त्री पात्र समाज और परिस्थितियों से उबर नहीं पाये उनमें एक हताशाभरी स्वीकश्ति थी। 'मैंने तब तक यही देखा था, दु:ख को चुपचाप घूंट लेना: अन्याय के बावजूद कोई प्रतिक्रिया न दिखाना.; परिस्थितियों को रो–धोकर स्वीकार कर लेना : सीमित दायरों में बद्ध रहना, मैं हर ओर यही देख पा रही थी, और यह स्थितियाँ मेरी सारी प्रारम्भिक कहानियों में चित्रित हुई है।'[५]

'नामवर सिंह का कहना है कि 'जिस समस्या के आधार पर कहानी 'नयी कहानी' कही गयी है, वह

Scanned with OKEN Scanner

Atmaj

Academic Research Journal

An International Peer-Reviewed Research Journal

ISSN: 2348 - 9456

Impact Factor 5.450

Volume-XVIII, Issue -IX, July-Dec. - 2022

Editor-In-Chief

Dr. Dilkhush Patel

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2348-9456
Impect Factor : 5.450

EDITORIAL BOARD

Editor – in - Chief

Dr. Dilkhush U. Patel
Principal
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College
Vadnagar 384355

Executive Publisher & Managing Editor

Dr. Dilkhush U. Patel
Chief Editor & Publisher
Vadnagar
Gujarat (India)

Associate Editor

Dr. Prakash R. Patel
Associate Professor and Head
Department of Economics
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College

Dr. Dinesh N. Patel
Assistant Professor and Head
Department of Commerce
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College

Advisory Editors

Prof. (Dr.) Nirnjan P. Patel
In-charge Vice Chancellor
Sardar Patel University, V.V.nagar

Dr. D. B. Rathva
Professor and Head
Department of Sanskrit and Bharatiya Vidya
Hemchandracharya North Gujarat University, Patan

Dr. M. J. Viradiya
Department of Sanskrit
Smt. A. P. Arts and N. P. Patel Commerce College, Naroda

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2348-9456
Impect Factor : 5.450

Content of the Table

Sr. No.	Title of the Paper	Author	Page No.
1	A STUDY ON CUSTOMER SATISFACTION TOWARDS DTH SERVICE PROVIDES BASED IN GUJARAT	AJAYKUMAR M. VARIYA	1
2	GST REFORMS IN INDIA: IMPACTS AND IMPLICATIONS	AKASH DANTANI	7
3	CONCEPTUAL REVIEW OF JOB SATISFACTION OF ACADEMICIANS	DILIPKUMAR A. VAGDIYA	11
4	FINANCIAL PERFORMANCE OF ULTRATECH CEMENT LTD. AND J. K CEMENT LTD.	DR.GORDHAN P.SOLANKI	15
5	A STUDY OF SELF-CONCEPT, AND ACADEMIC ACHIEVEMENT OF STD-10TH AND STD-12TH STUDENTS	Dr. Hiralal Dahyalal Parmar	19
6	Comparative study of different types of addictive behavior in Tribal and Slum area of Gujarat	Dr. Bhanu Kapadia Dr. Pranjali S. Dighe	24
7	Social Competence in Adolescents Period	Dr. Ronakkumar R. Parmar	33
8	Analysis of Index Trading with Protective Put during covid-19: Evidence from Nifty 50 Index	Kaival Dave Dr. Ruchita Dave	37
9	PRESENT SCENARIO OF INDIAN ACCOUNTING STANDARD BETWEEN INTERNATIONAL ACCOUNTING STANDARD	Prof.RAJESH PUNABHAI GANAVA	43
10	ECONOMIC REFORM AND PROCESS OF GLOBAL INTEGRATION	Prof. VINA M. BANSAL	48
11	EMOTIONAL MATURITY AMONG SECONDARY SCHOOL STUDENTS	Ram Devraj Gadhavi	51
12	સ્ત્રીશિક્ષણ: બદલાતી ક્ષિતિજો	ડૉ. દિપીકાબેન કે. રોહિત	56
13	ભારતમાં ગ્રામીણ બિન ખેતી વ્યવસાય	ડૉ. જાગૃતિ એમ. પંડ્યા	62
14	શ્રી ગોવિંદ ગુરૂ યુનિવર્સીટીમાં અભ્યાસ કરતાં અનુસ્નાતક વિદ્યાર્થીઓની વાંચન ટેવ	Sevak Niraliben Upendrakumar	૬૯
15	ભાવનગર ના સામાજિક, શૈક્ષણિક વિકાસમાં શિશુવિહાર સંસ્થા નું પ્રદાન	કોમલ સી. જાંબુચા	74
16	સમાજમાં શિક્ષણની પ્રગતિ અને વિકાસ	ડૉ. માલાબેન ડી. ગામીત	77
17	શેઠ શ્રી ગીરધરલાલ છોટાલાલ : એક સ્વાતંત્ર્ય સેનાની તરીકે	ડૉ.ગણેશ એન. નિસરતા	81
18	પાલનપુરરાજ્યના દીવાન મુઝ્રાહિતખાન-૨ (ઈ.સ. ૧૬૩૮-૧૬૬૩)	ડૉ.દિપક એમ.પટેલ	85

Scanned with OKEN Scanner

Volume – XVIII Issue – IX, July – Dec. - 2022 ISSN: 2348-9456
Impect Factor : 5.450

"FINANCIAL PERFORMANCE OF ULTRATECH CEMENT LTD. AND J. K CEMENT LTD.

DR.GORDHAN P.SOLANKI
ASSISTANT PROFESSOR
BHAVAN'S SHRI A K DOSHI MAHILA COLLEGE, JAMNAGAR

ABSTRACT:

The study analyzed financial performance of Ultratech cement ltd and J k cement ltd companies using Altman's Z-score model. The period of the study was five years from march 2018 to march 2022. The study found that financial soundness of Ultratech Cement ltd was little good than J k cement ltd, during the study period. Ultratech cement ltd Z-score was more than the standard during three years of the study period. Financial position of Ultratech Cements Ltd. Is good than J k cement ltd, since their overall Z-score was more than the standard during three years and it was at moderate level during two years. Financial soundness of J k Cements Ltd was little satisfactory during the study period, its Z-score was more than the standard during two years and it was moderate during three years. Financial soundness in terms of Z-scores of J k Cements Ltd Was not very good in 2018,2019 and 2020 and Financial soundness in terms of Z-scores of Ultratech Cements Ltd. Was not very good in 2019 and 2020.

INTRODUCTION:

Cement industry is one of the basic industries in India. This industry supports for the development of economy, since it provides raw material to all infrastructure of the country. In India there are many cement units in various sizes such as small, medium and large. But most of the cement products are being produced by joint large units such as joint stock companies. Cement industry provides employment opportunities to people both directly and indirectly and it provides continues supply of cement for construction. Joint stock companies are invested by industrialists and public by buying shares. Long survival of the companies will help the investors to get return on their investment and capital appreciation of their investment. Long survival of a company is possible only by earning stable and continues profit, it is possible with efficient financial management. So study of financial performance of cement companies is becoming importance. A study of financial management includes both short term and long term financial management. Some methods propounded by earlier researchers to study efficiency of financial management of manufacturing companies. Altman's Z-score model is one of the popular models to study financial performance of manufacturing companies. The study has applied the above method for the present study.

UltraTech Cement Limited

UltraTech Cement is the largest cement company in India and amongst the leading producers of cement globally. UltraTech is also the largest manufacturer of white cement and ready mix concrete (RMC) in India. As a responsible contributor towards sustainable development, UltraTech Cement balances the growing demand for cement and its environmental implications by developing and championing sustainable solutions. UltraTech Cement has 12 composite plants, one white cement plant, one wall care putty plant, one clinkerisation plant in the UAE, 16 grinding units (12 in India, two in the UAE and one each in Bahrain and Bangladesh) and six bulk terminals (five in India and one in Sri Lanka). UltraTech Cement is also India's largest exporter of cement and clinker reaching out to meet demand in countries around the Indian Ocean and the Middle East.

J.K. Cement Limited

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2394-5303

Printing Area®

Issue-99, Vol-02, March 2023
Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with OKEN Scanner

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

March 2023, Issue-99, Vol-02

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

Printing Area

www. विद्यावार्ता .कॉम

You Tube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT FACTOR 9.001 IIJIF

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. • ISO9001-2015 CERTIFIED • International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

25) राष्ट्रीयता की इतिहासभाषी चेतना और विभाजन से जुड़े उपन्यास
डॉ. नज़मा एम. अंसारी (गुजरात) ||134

26) परिवर्तनशील मुस्लिम बंजारा महिलाओं का शैक्षिक अध्ययन
नाजमीन ||140

27) दीनदयाल शर्मा के बाल कविता का समालोचनात्मक परिचय
डॉ.विरनाथ पांडुरंग हुमनाबादे, जि.लातूर, महाराष्ट्र ||143

28) भारत के विभिन्न प्रांतों के लोक नृत्य
राजेश कुमार, शिवनगर, जम्मू तवी ||146

29) उत्तराखण्ड राज्य में पलायन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. अनीता सिंह, लोहाघाट, चम्पावत ||148

30) गुणत्रय का स्वरूप : श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार
डॉ. तरुण कुमार दीप, दिल्ली ||153

31) एनसीसी : राष्ट्र निर्माण में महत्व एवं भूमिका
लेफ्टिनेंट (डॉ०) कौशलेन्द्र वर्मा ||155

32) किशोरावस्था एवम बालिका शिक्षा
धर्मेंद्र कुमार वर्मा, जयपुर, राजस्थान ||159

33) वस्तु एवं सेवा करके केंद्र में उभरता भारत
डॉ. विनोद कुमार, अमरोहा, उत्तरप्रदेश ||164

34) प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के तनाव प्रबन्धन का अध्ययन
डॉ० एम०पी० सिंह, कानपुर देहात (उ०प्र०) ||167

35) निपुण भारत मिशन
डॉ. उषा दुबे, ग्वालियर ||172

36) मानव तस्करी : मानवता का काला अध्याय
डॉ. श्यामसिंह राजपुरोहित ||174

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

25

राष्ट्रीयता की इतिहासभाषी चेतना और विभाजन से जुड़े उपन्यास

डॉ. नज़मा एम. अंसारी
श्री ए. के. दोशी महिला कॉलेज–जामनगर (गुजरात)

****

हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रीयता को आधार बनाकर लिखे जाने जाले उपन्यासों की संख्या बहुत अधिक नहीं है और विभाजन को विषय बनाकर लिखे जाने वाले उपन्यास तो गिने–चुने हैं । "हिन्दी कथा साहित्य में विभाजन को विषय बनाकर लिखे गये उपन्यासों की कमी की तो शिकायत होती है, साथ ही यह भी कहा जाता है कि यहाँ 'मंटो' या 'कुर्तुल–ए–हैदर' जैसे उर्दू के उपन्यासकारों की तरह एक गहरी संवेदनशीलता का अभाव मिलता है ।"[१] हिन्दी में लिखे जाने वाले उपन्यासों की संख्या इस पूरे उपमहाद्वीप में किसी भी भाषा में लिखे जाने वाले उपन्यासों की तुलना में अधिक होती है, लेकिन आलोच्य विषय पर इतने कम उपन्यासों का होना किसी और कारण की ओर इशारा करता है । हिन्दी उपन्यास में 'झूठा–सच' 'तमस' और 'आधा गाँव' जैसे कुछ उपन्यास ही भारत के विभाजन और उससे जुड़ी त्रासदी को सामने रखते हैं । "यूँ तो राष्ट्रीयता के नाम पर भावनात्मक उछाल वाले उपन्यासों की संख्या अधिक है, लेकिन इतिहास और यथार्थ के साथ इस विषय पर कम ही रचनाएँ लिखी गई हैं।"[२]

राष्ट्रीयता की चेतना आधुनिक भावबोध की उपज है, इसका हमारे आधुनिक इतिहास में गहरा संबंध है, बल्कि यूँ कहें कि भूगोल से भी। भारत में राष्ट्रीयता को केन्द्र में रखकर सबसे पहले बंग्ला उपन्यासकारों ने लिखा । "हिन्दी में प्रच्छन्न रूप से यह प्रवशत्ति देवकी नंदन खत्री के साथ शुरू होती है। लेकिन राष्ट्रीयता की ठोस समझ २० वीं शताब्दी के उपन्यासकारों में ही मिलती है ।"[३] भारत एक राष्ट्र है, इस राष्ट्र की कुछ निश्चित भौगोलिक सीमाएँ हैं, और इसकी कुछ सामाजिक सांस्कृतिक विशिष्टताएँ हैं, इस भावना से प्रेरित होकर जो उपन्यास लिखे गए उनका प्राथमिक उद्देश्य समाज में राष्ट्रीयता की भावनाओं जगाकर मुक्ति संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित करना था।

देश को १९४७ में आज़ादी मिली, लेकिन देश दो हिस्सों में विभाजीत भी हो गया । १९४७ के पहले से ही विभाजन की मानसिकता बन रही थी। "वैसे विभाजन को लेकर आम जनता से कम, राजनीतिक दलों में ज्यादा उत्साह था, यहाँ आ करके राष्ट्रीयता का प्रश्न खड़ा होने लगा कि कौन सा राष्ट्र? हिन्दू राष्ट्र? या मुस्लिम राष्ट्र? भारत या पाकिस्तान? या कि राष्ट्रीयता इससे परे भी कोई विचार है।"[४] भारत और पाकिस्तान के इतिहास राष्ट्रीयता की अलग–अलग धाराओं को प्रस्तुत करते हैं, जो राष्ट्रीयता स्वतंत्रता के समय तक एक थी बाद में जा करके बँट गई। आज पाकिस्तान का आम विद्यार्थी या पाठक राष्ट्रीयता का जो पाठ पढ़ता है वह उसके समकालीन भारतीय विद्यार्थी या पाठक से एकदम अलग होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि राष्ट्रीयता एक ऐसी विचारधारा है जिसका राजनीति धर्म और भूगोल से गहरा रिश्ता है । देश की सीमाएँ बँटने से राष्ट्रीयता भी बदल जाती है और साथ ही उसको जीने वाले लोग भी बँट जाते हैं। भारत का विभाजन एक ऐसी ही घटना है जिसमें दोनों हिस्सों में रहने वाले लोगों के वर्तमान और भविष्य के साथ–साथ इतिहास को भी बदल दिया । हिन्दी में जो भी प्रमुख उपन्यास इस विषय पर लिखे गए उन्होंने विभाजन और उसके पीछे कार्य कर रही अलगाववादी चेतना को सही नहीं माना है। 'झूठा–सच', 'तमस' और 'आधा–गाँव', इन तीनों ही उपन्यासों ने भिन्न और विरोधी राष्ट्रीयताओं को अस्वीकार किया है, एवं उसके पीछे कार्य कर रही साम्प्रदायिक चेतना को उजागर करने की कोशिश की है । असल में राष्ट्रीयता की जड़ों को जब इतिहास से निकालने की कोशिश की जाती है, तो उसमे निकालने वाले की दृष्टि का

बड़ा महत्व होता है, आप अकबर को राष्ट्रीय नायक भी मान सकते है और खलनायक भी मान सकते है। क्योंकि यहाँ महत्वपूर्ण इतिहास के तथ्य नहीं होते बल्कि वह दृष्टि होती है जो इतिहास को देखने का कार्य करती है।'

इसी प्रकार आख्यान में इतिहास के सहारे राष्ट्रीयता की चेतना को उकेरने में लेखकीय दृष्टि का बड़ा महत्व होता है। हम इसी संदर्भ में विभाजन से जुड़े उपन्यासों की पड़ताल कर सकते हैं। भारत के विभाजन की पश्ष्ठभूमि से लेकर विभाजन के विभीषिका के लगभग समाप्त होने तक के कालखण्ड यानि कि १९४२ से १९५७ ई. तक को समेटने वाला यशपाल का उपन्यास 'झूठा—सच' दो भागों में बँटा हुआ है । इन दोनों भागों में विभाजन का समय ही विभाजक रेखा का भी काम करता है ।

पहले भाग में लाहौर के गली—मुहल्लों की बँधी बँधाई जिंदगीयों के बीच पनपने वाली साम्प्रदायिकता के विकास को देखा जा सकता है। जिसका अंतिम परिणाम देश के विभाजन के रूप में होता है। दूसरे भाग में बँटवारे के बाद साख से टूटे पत्तों की तरह, हवा में इधर से उधर भटकते लोगों की जिन्दगी का वर्णन है जो एक बार फिर से जीवन को जीने के लिए लालायित हैं, भयंकर त्रासदी झेलने के बावजूद विभाजन का अंकन करते हुए यशपाल ने उसके पीछे कार्य रही मानसिकता के उत्स, उसकी पृष्ठभूमि एवं त्रासद घटनाओं को अंकित किया है। यशपाल ने साम्प्रदायिकता के विकास के पीछे कार्य कर रही शक्तियों को पहचानने की कोशिश की है। उनका यह मानना है कि साम्प्रदायिकता विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा पैदा की गई चीज है, एवं इसकी जड़े औपनिवेशिक शासन से ही खोजी जा सकती हैं, यद्यपि हिन्दू—मुसलमानों के बीच भेद को उन्होंने स्वीकार किया है लेकिन वे उनके बीच स्थापित सामंजस्य—हिन्दुस्तान की भावना को भी महत्व देते हैं । यशपाल ने लिखा है "आजादी का दुश्मन की विशिष्टता को प्रभावित किया है। आख्यान की विशिष्टता इतिहास बनने में नहीं होती है; बल्कि इतिहास को अपने भीतर समालेने में होती है। इसी कारण से 'झूठा—सच' न सफल इतिहास बन सका है और नहीं उत्कृष्ट आख्यान।"[५]

१९६६ में प्रकाशित राही मासूम रजा के पहले उपन्यास 'आधागाँव' का विषय विभाजन है। 'आधा गाँव' में विभाजन उस प्रकार से मुख्य वर्ण्य—विषय नहीं है, जैसा कि 'झूठा सच। 'आधा गाँव' गाजीपुर के एक गाँव गंगौली की कथा कहता है, जिसके बगल में गंगा बहती है, एवं गाँव की अधिकांश आबादी शिया मुसलमानों की है। राही मासूम रजा ने गाजीपुर एवं गंगौली के ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को अपनी रचना के केन्द्र में रखा है । यह उपन्यास रचनात्मक स्तर पर एक यात्रा की भूमिका जिसकी खोज महाकाव्यत्व की प्राप्ति है। राही मासूम रजा ने लिखा है "यह उपन्यास वास्तव में मेरा एक सफर है, मैं गाजीपुर की तलाश में निकला हूँ लेकिन पहले मैं अपनी गंगौली में रहूँगाँ । अगर गंगौली की हकीकत पकड़ में आई तो मैं गाजीपुर का एपिक लिखने का साहस करूंगा।"[६] यह उपन्यास वास्तव में उस एपिक की भूमिका है। इस उपन्यास में राही मासूम रजा की आत्मकथा एवं कल्पना निसश्त कथा का अद्भुत मेल है। उन्होंने अपने बचपन की स्मशतियों को अपनी सश्जनात्मकता द्वारा एक नया ही रूप दे दिया है। वे बार— बार आख्यान और इतिहास के बीच सहजता से आवागमन करते हैं, एवं दोनों को अतिक्रमित करते हैं । उपन्यास की शुरूआत इसी दर्द के साथ होती है कि गंगौली में पिछले दिनों से गंगौली वालों की संख्या कम और सुन्नियों और हिन्दुओं की संख्या अधिक होती जा रही है। विभाजन की त्रासदी को एक छोटे से गाँव के पर पड़ने वाले प्रभाव तथा वहाँ के लोगों की जिन्दगी में आ रहे बदलावों की मार्मिक कथा को सहजता के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में एक छोटे से बच्चे 'मासूम' द्वारा अपने आस—पास की दुनियाँ को देखने और पहचानने की कोशिशों से कथा बनती है। सैय्यदों की दुनियाँ उत्तर पट्टी वाले घरों की रोजमर्रा की जिन्दगियों में होने वाली छोटीफ—छोटी

Scanned with OKEN Scanner

Vidyawarta®

Issue-46, Vol-03, April to June 2023

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता ™

April To June 2023
Issue 46, Vol-03

Date of Publication
01 April 2023

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

Date of Publication
01 April 2023

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats)

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT FACTOR 9.154 IIJIF

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Harshwardhan Publication Pvt. Ltd. • International Multilingual Research Journal • ISO 9001:2015 Certified Quality Management System

http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

27) मूल्यांकन सामग्री का अनुवाद : अशुद्धियाँ और समाधान ||114
डॉ. विजय कलमधार, छिंदवाड़ा (म.प्र.)

28) मोहन राकेश के कहानियों में पारिवारिक संवेदना ||118
डॉ. नजमा एम. अंसारी, जामनगर (गुजरात)

29) माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का ... ||122
डॉ० हरीश कंसल, निहारिका मिश्रा, राजस्थान

30) तकनीकी स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन : योग साधना के ... ||127
डॉ० पंकज कुमार, चन्दौली (उ०प्र०)

31) महिलाओं के अधिकारों की पृष्ठभूमि : प्राचीन भारत के विशेष सन्दर्भ में ||131
कविता, जयपुर

32) दलितों के शैक्षणिक उद्धार में सूचना और प्रौद्योगिकी की भूमिका ||136
समीर, सत्य प्रकाश, मेरठ, उत्तर प्रदेश (भारत)

33) उत्तर प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों के ग्रंथालयों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ||142
संतोष सिंह राठौर, ग्वालियर (म.प्र.)

34) रघुवीर सहाय के कविता में सामाजिक बोध ||145
प्रा. डॉ. शेख आर. वाय., ता. उमरगा

35) समाज सुधारक कवि कबीरदास ||148
डॉ. श्रद्धा हिरकने, पृथुराज सिंह राजपूत, प्रियंका पटेल, रायपुर

36) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की गणित विषय में समस्या समाधान योग्यता पर ... ||151
प्रो० शिवम् श्रीवास्तव, शिवमूर्ति, अयोध्या (उ०प्र०)

37) विद्यार्थियों के मानसिक दबाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन ||156
संतोष सिंह, शाहजहाँपुर, उ. प्र.

38) डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन में शिक्षा और नारी : एक अनुशीलन ||158
ममता भाटी, मेरठ

39) जयपुर के पर्यटन में स्थापत्य की भूमिका ||164
सीताराम मेसारिया, जयपुर

www.vidyawarta.com/03_http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

28

मोहन राकेश के कहानियों में पारिवारिक संवेदना

डॉ. नज़मा एम. अंसारी
श्री ए. के. दोशी महिला कॉलेज–जामनगर (गुजरात)

****

हिन्दी विश्वकोश के अनुसार परिवार साधारणतया पति–पत्नी और बच्चों के समूह को कहते हैं, किंतु दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वास वाले रक्त सम्बन्धियों का समूह है जिसमें विवाह और दत्तक प्रथा द्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवारक् से ही निर्धारित होती है। नर–नारी के यौन संबंध मुख्यत: परिवार के दायरे में निबद्ध होते हैं।

इस प्रकार पारिवारिक जीवन के अन्तर्गत मुख्य रूप से प्रेम, प्रजनन, पोषण, शिक्षण, मनोरंजन, परिवार के अन्य सदस्यों के साथ स्नेह संबंध, यौन संबंध, श्रद्धा–संबंध, सहयोग, आर्थिक स्थिति, शैक्षिक प्रगति, सांस्कृतिक प्रगति के साथ–साथ पारिवारिक विघटन के प्रमुख आधार और पारिवारिक विघटन के मुख्य–मुख्य कारण आते हैं।

दम्पति और परिवार सामाजिक संस्था की दो अटूट कड़ियां हैं। दम्पति परिवार का आधार स्तम्भ है और परिवार को समाज की नींव कहा जा सकता है। परिवार के दो प्रमुख भेद किए जा सकते हैं संयुक्त परिवार और एकाकी परिवार।

संयुक्त परिवार वह है जिसमें वे बहुत से लोग एकत्र रहते हैं जो या तो विवाह सूत्र में बंधे हो या फिर उनका रक्त संबंध हो या फिर गोद लिए गए हों। जो एक मकान में साथ रहते हों, साथ कार्य करते हों, एक–दूसरे के प्रति सामाजिक आदान–प्रदान, पति–पत्नी का संबंध, माता–पिता का संबंध, पुत्र–पुत्री का संबंध, भाई–बहन का संबंध निर्वाह करते हुए एक सामान्य संस्कृति को अपनाएं हुए हों।[२]

विश्रृंखल परिवार काआरम्भ शुद्ध रूप से एक दम्पति के साथ होता है। किसी भी संयुक्त परिवार में से जब एक बालिग पुत्र विवाह उपरांत अपनी पत्नी को लेकर एक अलग परिवार का निर्माण करता है तब वह विश्रश्ंखला परिवार कहलाता है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव स्वरूप और आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आधुनिक काल के भारत में संयुक्त परिवार टूटने लगे और भारतीय समाज में विश्रश्ंखल परिवार अधिक पनपने लगे।[३]

हरबंस और नीलिमा की पारिवारिक संवेदनाएं उपन्यास के प्रत्येक पात्र को प्रभावित कर रही है। उसके पारिवारिक जीवन की घटना से उपघटनाएँ शाखाओं प्रशाखाओं के रूप में निरन्तर उपन्यास की गतिशीलता को बनाए रखती हैं हरबंस और नीलिमा के साथ–साथ अन्य पात्र भी तनाव ग्रस्त हैं जो सुखी और सफल दाम्पत्य जीवन पाने को व्याकुल हैं। सुशमा मधुसुदन से अपनी घर विशयक व्याकुलता के संदर्भ में कहती है, 'पहले में अपने लिए सुख चाहती हूँ, सुख जो एक छोटे–से घर मे ही मिल सकता है, जहाँ मैं एक छोटा सा बाग लगा सकूं और एक–एक पौधे को सींच कर बड़ा कर सकूं, उसकी हर नयी पत्ती को देखकर खुश हो सकूं।[४]

यामाघ कुमार को प्रो. मल्होत्रा के तनावमय पारिवारिक जीवन की संवेदनाओं के विशय में बताते हुए कहती है, प्रो. मल्होत्रा और उनकी पत्नी का आपसी व्यवहार ऐसा था मानों दोनों अपने बच्चों के माता–पिता न होकर एक होस्टेल चला रहे हो।[५]

इसी पंकार अपने तनावग्रस्त पारिवारिक जीवन की व्याख्या करते हुए श्यामा कहती है, – देव और वह दोनों अंधेरे में अपने संबंध जोड़ने का प्रयास करते थे। फिर भी असफल ही रहते थे। अपने ही पति से रोज एक नवीन पुरूष का परिचय पाना श्यामा को संवेदनाशून्य सा महसूस होता था। श्यामा अपने पति देव से शारीरिक संबंध के अतिरिक्त भी कोई संबंध चाहती किन्तु अन्त तक असफल ही रहती है।[६]

अपरिचित७ मोहन राकेश की दाम्पत्य संबंधों की जटिलता को निरूपित करने वाली कहानी है।

Scanned with OKEN Scanner

इसमें पारिवारिक जीवन का गलत चुनाव और रूचि वैभिन्य से उत्पन्न त्रासद संवेदनाओं का सजीव और मार्मिक चित्रण है।

स्त्री, अपरिचित व्यक्ति को पति के विशय में बताती है— इन्हें मेरी कोई आदत अच्छी नहीं लगती। मेरा मन होता है कि चांदनी रात में खेतों में घूमूं, या नदीं में पैर डालकर घंटों बैठी रहूँ, मगर ये कहते हैं कि ये सब आइडल मन की वृतियाँ हैं। इन्हें क्लब, संगीत सभाएं और डिनर पार्टियां अच्छी लगती हैं।८

यद्यपि अपरिचित स्त्री के दांपत्य जीवन की संवेदनाएँ कटुता, तिक्तता और रिक्तता का बोध करती हैं किन्तु फिर भी अपने गहने बेचकर पति की बाहर जाने की कोई एक साध पूरी होती देखकर संतोष का अनुभव करती है।

चौगान कहानी के द्वारा अनमेल और असमान वैवाहिक जीवन में आई यंत्रणा और कसक भरी संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया गया हे। लंदन से आकर कुछ वर्ष तो हैरी विलसन अकेले काट देता है। मगर जब अकेलापन बहुत ही असह्य प्रतीत होने लगा तो बगीचे की बूढ़ी नौकरानी की लड़की संतो को घर में रख लिया। सन्तो तब मुश्किल से सत्रह साल की थी।९

यद्यपि कुछ दिनों के परिचय के झोंके में कुमार, श्यामा से विवाह तो अवश्य कर लेता है१० किन्तु उनका दांपत्य जीवन अन्त तक संवेदनाशून्य ही रहता है। कुमार अकेले में सोचता है, उसकी नजर में अब भी एक अकेला आदमी था जिसका घर उसे संभालना पड़ रहा था। जबकि मेंरे लिए वह किसी दूसरे की पत्नी थी जिसके घर में मैं एक बेतुक महेमान की तरह टिका था११ कुमार और श्यामा दोनों का पारिवारिक जीवन इतना तनाव ग्रस्त था कि एक की मौजूदगी में दूसरा ज्यादा से ज्यादा समय घर से बाहर रहने का प्रयास करता है। पति—पत्नी होकर भी ज्यादा से ज्यादा औपचारिकता निभाने की दोनों को आदत पड़ चुकी थी।

मनोज को निरन्तर यह विचार कचोटता रहता है कि शोभा अपने पहले पीत को नहीं भूला पा रही है ओर मन ही मन उसकी तुलना अपने पूर्व पति से भी करती है[१२] इस तनाव को दूर करने के लिए वह रात को सड़कों पर घुमता रहता है। शोभा भी उसके घर लौटने से पहले ही सो चुकी होती है। यदी उसकी नींद खुल भी जाती तब नींद आने तक हम दो अजनबियों की तरह हम साथे पड़े रहते थे। वह बायें बिस्तर पर बायीं करवट, मैं दायें बिस्तर पर दायीं करवट। कभी गलत करवट में एक का हाथ दूसरे से छू जाता, तो एक शब्द में उसकी गलतफहमी दूर कर जाती, सारी१३

अपनी ही इच्छाओं और जिम्मेदारियों को पुग करने हेतु कुमार और श्यामा पारिवारिक विघटन के एक ऐसे मोड़ पर पहुंच जाते हैं जिससे बाहर निकलने का उपाय उन दोनों को ही नहीं आता था, फलस्वरूप उनका दाम्पत्य जीवन विघटन के कगार पर पहुंच जाता है।

जुगल ओर तोशी नामक पात्रों के माध्यम से पारिवारिक संबंधों में आई रिक्तता और ऊब भरी संवेदनाएं वर्णित की गई हैं। जुगल को उसके मायके वालों से चिढ़ थी, अपने घर के लोगों से चिढ़ थीं पी— पड़ोस के लोगों से चिढ़ थी, हर आने—जाने वाले से चिढ़ थी। कभी—कभी तो लगता था कि उस आदमी को सिवाय अपने हर एक से चिढ़ है, बलिक अपने आप से भी चिढ़ है१४

पति—पत्नी दोनों के स्वभाव का विरोधाभास ही उनके जीवन की कटुता और बेगानापन का उत्तरदायी है। जुगल और तोशी के माध्यम से दाम्पत्य संबंधों की नीरसता और अकेलेपन से भरी संवेदनाओं को सफलतापूर्वक अंकित किया गया है[१५]

इसी प्रकार रवि और मीरा ने स्वयं एक दूसरे का चयन किया हे। किन्तु विवाह के कुछ ही वर्षो के बाद उन्हें यह चयन औपचारिक और कृत्रिम लगने लगता है। रवि अपनी फैक्ट्री के कार्य में अत्यंत व्यस्त रहता है और मीरा की भावुकतापूर्ण बातें कभी भी पसंद नहीं करता[१६] रवि की यहीं आदते दाम्पत्य संबंधों में विघटन का कारण बनती हैं।

विवाह के पश्चात संतान का न होना भी व्यक्ति को संवेदना शून्य बनाता है। संतान के बिना परिवार पूर्ण नहीं हो पाता। मीरा भी निरन्तर इसी तनाव को झेल रही हे। कभी यह सोचकर उसके शरीर में झुरझुरी भर जाती कि इतने सालों से वह रोज दोनों वक्त, दो आदमियों का, सिर्फ दो आदमियों का खाना बनाती आ रही है। जिंदगी की यह एकतारता दो—एक बार तभी टूटी थी जब उसकी एबार्शन हुई थी और उसे अस्पताल जाना पड़ा था[१७]

विवाह के दस वर्ष बीत जाने के पश्चात भी पति—पत्नी के बीच उदासीनता रहती है१८ पति की

Scanned with OKEN Scanner

ISSUE - 8
YEAR - 10

MARCH - 2023
ISSN - 2321-7073

RESEARCH MATRIX

AN INTERNATIONAL DOUBLE BLIND PEER REVIEWED & REFEREED MULTIDISCIPLINARY JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

Organized by:

Smt. R. D. Gardi Bhavnagar Stree Kelvani Mandal Managed

SMT. N.C. GANDHI AND SMT. B.V. GANDHI MAHILA ARTS & COMMERCE COLLEGE, BHAVNAGAR.

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH MATRIX :2321-7073

" PEER REVIEWED & REFEREED "

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

EDITOR-IN-CHIEF
Dr. Kalpesh Rakholia

EDITOR
Dr. ALKESH VACHHANI
CELL :94286 22982

EDITOR
Dr. MITAL MANAVADARIA
CELL :98794 22702

ABOUT THE JOURNAL

RESEARCH MATRIX is an International Journal forall subjects (Multidisciplinary) publishing original papers, reviews articles on Research all Languages. It promotes interdisciplinary perspective to discuss issues of National and International Significance. Its regular features include research book editorial correspondence. All the Research papers are subject to a double- blind referring process and are published on the recommendation of reviewers and discretion of the editor. As far as the research papers are concerned, the views of statements expressed in the Research papers are solely of the author and the editor in not responsible for the same.

ABOUT THE JOURNAL

- Cooperation in the exchange of information about Physical Education, Applied Social
- Sciences, Commerce, Education and science Worldwide.
- Development of Research work.
- Balance of advanced theories and common practices.

AIM

- evelopment among various countries worldwide.
- To promote the study ofArts, Science, Management, Commerce and Education by using the
- advances in scientific research results.
- To establish a common foundation of theory based on the positive differences of various
- backgrounds.
- To develop interest in the significant study of various researchers.

Editor-In-Chief

RESEARCH MATRIX : International Multidisciplinary Journal of Applied Research
Uday Nagar Society, Block No.7/b, B/h.
Godhwani High School, JUNAGADH Pin – 362015
Website : www.researchmatrix.org Email : editorresearchmatrix@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH MATRIX :2321-7073

" PEER REVIEWED & REFEREED "

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

NATIONAL INSTITUTE OF SCIENCE COMMUNICATION AND INFORMATION RESOURCES

(Council of Scientific and Industrial Research)

14, Satsang Vihar Marg, New Delhi 110 067

Ms. V. V. Lakshmi, Head, National Science Library
Phone: 91-11-2686 3759
E-mail: vvlakshmi@niscair.res.in website: www.niscair.res.in

NSL/ISSN/INF/2013/1516 **Dated: July 17, 2013**

Mr. Kalpesh R. Rakholiya
Junagadh ,
Timbawadi,
Uday nagar soc. block no 7/b
b/h godhwani high school
pin-362015

Dear Sir/ Madam,
We are happy to inform you that the following serial(s) published by you has been registered and assigned ISSN (Print)

ISSN 2321 – 7073 **Research Matrix**

It is important that the ISSN should be printed on every issue preferably at the right hand top corner of the cover page.

The Indian National Centre will be responsible for monitoring the use of ISSN assigned to Indian Serials and for supplying up to-date data of the same to the International Centre for ISSN, Paris. For this purpose we request you to send us the forth coming issue of your serial on complimentary basis.

We solicit your co-operation in this regard.

Yours sincerely

V.V. Lakshmi

(V.V. Lakshmi)
Head
National Science Library

Please don't forget to send a sample issue of the journal/URL with ISSN printed on it.

Contact : Ms. Shobhna Vij
e-mail : issn.india@niscair.res.in
phone : 011-26516672

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH MATRIX :2321-7073
Peer Reviewed & Refereed | International Multidisciplinary journal of applied research

INDEX

SR.NO.	TITLE & AUTHOR	PAGE NO.
1	INDIAN TAXATION SYSTEM@75 SPECIAL REFERENCE TO GOODS & SERVICE TAX PROF. DR. ARUNKUMARN MAKWANA	1 TO 4
2	CONTRIBUTION OF AGRICULTURAL GI GOODS IN RURAL DEVELOPMENT OF GUJARAT & RAJASTHAN BHAVDEV GADHAVI CHARAN DR. SATISH PATEL	5 TO 8
3	INDIAN TAX STRUCTURE- AN ANALYTICAL PERSPECTIVE DR. GORDHAN P. SOLANKI	9 TO 13
4	G20 AND GUJARAT : A GOOD INVESTMENT DESTINATION GURU PRAKASH SINGH	14 TO 19
5	MACHINE LEARNING IN AGRICULTURE FOR CROP DISEASES IDENTIFICATION: A SURVEY MR. HIRENKUMAR KUKADIYA DR. DIVYAKANT MEVA	20 TO 30
6	LEARNING LANGUAGE THROUGH REFLECTION DR ISHITA BADIYANI	31 TO 34
7	MYTHOLOGICAL WOMEN IN THE POST INDEPENDENCE INDO-ENGLISH LITERATURE MS. ASMITA B. PATEL	35 TO 38
8	A STUDY OF FAILURE OF COROPRATE GOVERNANCE IN ICICI BANK WITH RESPECT OF CURRENT SITUATIONIN INDIA JAYENDRA P. SIDDHAPURA	39 TO 43
9	INTERNATIONAL FINANCIAL REPORTING STANDARDS: A THEORETICAL STUDY IN INDIAN CONTEXT DR. PROF. KISHOR V. BHESANIYA	44 TO 47
10	AN ANALYSIS OF LIQUIDITY MANAGEMENT: A COMPARATIVE STUDY OF FOOD PROCESSING INDUSTRY IN INDIA KRISHNA M. LAKHANI DR. B. L. SARDHARA	48 TO 53

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH MATRIX :2321-7073

Peer Reviewed & Refereed | International Multidisciplinary journal of applied research

INDIAN TAX STRUCTURE – AN ANALYTICAL PERSPECTIVE

DR. GORDHAN P. SOLANKI

ASSISTANT PROFESSOR, BHAVAN'S SHRI A K DOSHI MAHILA COLLEGE, JAMNAGAR

ABSTRACT

Tax is the major source of revenue for the government, the development of any country's economy largely depends on the tax structure it has adopted.

A Taxation Structure which facilitates easy of doing business and having no chance for tax evasion brings prosperity to a country's economy. On the other hand taxation structure which has provisions for tax evasion and the one which does not facilitate ease of doing business slows down the growth of country's economy. Therefore as taxation structure plays an important role in country's development. India has a well-developed tax structure. The power to levy taxes and duties is distributed among the three tiers of Government, in accordance with the provisions of the Indian Constitution. Indian taxation structure has gone through many reforms and still it is very far ahead from being a ideal taxation structure. Many problems like Tax Evasion, Reliance on indirect taxes, Black money, existence of parallel economy show that Indian taxation system requires some major reforms in the future ahead to address all this problems. In the following paper, the study is purely based on secondary data. Various figures are obtained from the different websites of government of India. It is seen that there are various number of taxes and different tax collection authorities in Tax is the major source of revenue for the government, the development of any country's economy largely depends on the tax structure it has adopted. A Taxation Structure which facilitates easy of doing business and having no chance for tax evasion brings prosperity to a country's economy. On the other hand taxation structure which has provisions for tax evasion and the one which does not facilitate ease Tax is the major source of revenue for the government, the development of any country's economy largely depends on the tax structure it has adopted. A Taxation Structure which facilitates easy of doin Tax is the major source of revenue for the government, the development of any country's economy largely depends on the tax structure it has adopted. A Taxation Structure which facilitates easy of doin Tax is the major source of revenue for the government, the development of any country's economy largely depends on the tax structure it has adopted. A Taxation Structure which facilitates easy of doin India. Also it is seen that there is major dependence on indirect taxes for tax collection than the direct taxes. Both Indirect taxes and Direct taxes have their own advantages and disadvantages.

Tax is the major source of revenue for the government, the development of any country's economy largely depends on the tax structure it has adopted. A Taxation Structure which facilitates easy of doing business and having no chance for tax evasion brings prosperity to a country's economy. On the other hand taxation structure which has provisions for tax evasion and the one which does not facilitate ease of doing business slows down the growth of country's economy. Therefore as taxation structure plays an important role in country's development. India has a well-developed tax structure. The power to levy taxes and duties is distributed among the three tiers of Government, in accordance with the provisions of the Indian Constitution. Indian taxation structure has gone through many reforms and still it is very far ahead from being a ideal taxation structure. Many problems like Tax Evasion, Reliance on indirect taxes, Black money, existence of parallel economy show that Indian taxation system requires some major reforms in the future ahead to address all this problems. In the following paper, the study is purely based on secondary data. Various figures are obtained from the different websites of government of India. It is seen that there are various number of taxes and different tax collection authorities in India. Also it is seen that there is major dependence

Scanned with OKEN Scanner

International Peer-Reviewed Referred Journal

Ayudh

Impact Factor : 4.9

ISSN - 2321 : 2160

Vol-15

Special Issue

February - 2023

A Special Issue on Conference Proceedings

Research & Research Methodology

Organized by
Bahauddin Govt. Arts College - Junagadh &
Dharmendrasinhji Arts College - Rajkot
in Collaboration with
Ayudh Publication - Bhavnagar

Held on 11th February, 2023

Guest Editors

Dr. Arunendrasinh Rathod
Dr. Bhavesh Kachhadiya
Dr. P. V. Barasia
Dr. Jiten Parmar

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2321-2160

Ayudh

International Peer-Reviewed Refereed Journal
Special Issue Volume-15 February-2023

Bahauddin Govt. Arts College – Junagadh
&
Dharmendrasinhji Arts College – Rajkot

in Collaboration with
Ayudh Publication – Bhavnagar

Jointly Organized

One Day International Conference
on

Research & Research Methodology

on

11th February, 2023, Saturday

Scanned with OKEN Scanner

Valid up to 22/05/2023

Anthelion Impact Factor

Certificate of Acknowledgement

This is to certify that AYUDH (International Peer-Reviewed Refereed Journal)
P-ISSN: 2321-2160 E-ISSN: XXXX-XXXX Formerly UGC Approval No. 47772
has been reviewed and evaluated by our reviewers.
The journal has gone under the Blind Peer Review and has acquired
4.9 the Impact Factor for the year 2021-22

Anthelion

Director
Anthelion Impact Factor
www.anthelion.in

https://anthelion.in

∞ Impact Factor: 4.9 ∞

Scanned with OKEN Scanner

18. ગુજરાતી સાહિત્ય અને સંશોધન
ડૉ. ગીતા એલ. ઓડેદરા 89

19. યોગની વિવિધ તાલીમ દ્વારા આધ્યાત્મિક મૂલ્યો પર થતી અસરોનો અભ્યાસ
નિકુંજ આર. જાગાણી & ડૉ. નિરજ ની. સિલાવટ 92

20. ગુજરાતી ગદ્યનું પ્રભાત: વીર નર્મદ
નિલમબેન મનુભાઈ પરમાર 96

21. भारतीय साहित्य के आधार - तत्व
प्रो. डॉ. निरुबेन हरसुखभाई बोरिसानिया 100

22. સંશોધનનું પદ્ધતિશાસ્ત્ર : ઉત્કલ્પના (પૂર્વધારણા) ના પ્રકારો અને સંશોધન
જયશ્રીબેન ગુલાબભાઈ ચૌધરી 103

23. Yogic Meditation
Dr. Yogesh A. Chavda 109

24. 'કેસૂડાં કામણગારાં'ના ગીતોમાં અભિવ્યક્ત સાંસારિક સંદર્ભ
પ્રા. ડૉ. જલ્પાબહેન જે. પટેલ 113

25. પુરાકલ્પન સંજ્ઞા અને સ્વરૂપ
ડૉ. પિનાકિન વસંતરાય જોષી 122

26. મધ્યકાલીન ગુજરાતી સાહિત્યમાં સંશોધન-સંપાદન
Varshaben J. Rohit 128

27. સંશોધન અને ગુજરાતી સાહિત્ય સંશોધન
વિજયકુમાર ધનજીભાઈ ગોહેલ 131

28. સંશોધન અને નીતિમત્તા
ડૉ. ધર્મિષ્ઠા પી. કરડાણી 138

29. शीर्षक - एक अध्यन
डॉ. देवेंद्रसिंह एल. गोहिल 142

30. Research Methods in Sanskrit
Dr. Avaniben N. Nimavat 143

Ayudh Publication

Since 2013

Scanned with OKEN Scanner

સંશોધન અને નીતિમતા

ડૉ. ધર્મિષ્ઠા પી. કરડાણી
એ. કે. દોશી. મહિલા કોલેજ, જામનગર

માનવી પોતાની જિજ્ઞાસાને કારણે કોઈને કોઈ અજ્ઞાત તથ્યોને જાણવાની દિશામાં સતત પ્રયત્નશીલ બને છે. આને પરિણામે પ્રાકૃતિક, તથા સામાજિક ઘટનાઓને સમજવાનો પ્રયત્ન માનવીએ કર્યો તેમાંથી સામાજિક સંશોધનનો ઉદ્ભવ થયો .

સામાજિક જીવનના સંબંધમાં શોધ કરવાની એક વૈજ્ઞાનિક પદ્ધતિને સામાજિક સંશોધન કહે છે .જેમાં સમાજના ભિન્ન ભિન્ન પાસાનો અભ્યાસ કરવામાં આવે છે આવા અભ્યાસના અનેક હેતુઓ ઉપરાંત સામાજિક સંશોધનનું લક્ષ, આધાર, પરિપ્રેક્ષ્ય, દ્રષ્ટિકોણ, વ્યાપ અને સંદર્ભ પણ હોય છે. આવા સંશોધન અભ્યાસના પરિવર્ત્યો હોય છે. જેના વડે વૈજ્ઞાનિક દ્રષ્ટિકોણ ની પ્રમાણિત અને વિશ્વાસનીય જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને આગાહી અને ચકાસણીજન્ય પદ્ધતિઓ દ્વારા હકીકતો શોધવા માટેની હકીકતો વચ્ચેનો સંબંધ શોધવા માટેની અને તેના આધારે સિદ્ધાંત કે નિયમો તારવવા માટેની વ્યવસ્થિત તપાસને સંશોધન કહેવાય.

સંશોધન એ સામાજિક હકીકતોનો અભ્યાસ કરે છે. ઘણીવાર અનુભાવિક એવી વાસ્તવિકતા સામાજિક હકીકતોનો અભ્યાસ મુશ્કેલ છે. હકીકતો નજરે જોઈ શકતા નથી અનુભવ થઈ શકે છે. અવ્યક્ત એવી પણ વર્તનમાં વ્યક્ત થતી આનુભવીક વાસ્તવિકતા એ સામાજિક હકીકતો છે. ઉ. દા સમાજ અને રાષ્ટ્ર પ્રત્યે માન હોય પણ એ લાગણી બહાર બતાવી શકતા નથી, સમાજ રીતી રિવાજો જે આપણે ભંગ કરીએ ત્યારે ખ્યાલ પડે અર્થાત સામાજિક હકીકતો દેખાતી નથી પણ વર્તમાનમાં વ્યક્ત થાય છે. તેનો અભ્યાસ વિશ્લેષણ, તાણાવાણા સ્વરૂપ સમજવાનો પ્રયત્ન કરીએ ત્યારે જ તે સાચી હકીકતો, પરિસ્થિતિનો અભ્યાસ છે.

સંશોધન હંમેશા ચોક્કસ હેતુઓને અનુલક્ષીને કરવામાં આવે છે. સંશોધન માટેની સમસ્યાને તાર્કિક રીતે હેતુઓમાં વહેંચવામાં આવે છે. આમ, સૌપ્રથમ સંશોધનમાં તેના હેતુઓ સ્પષ્ટ થાય તે મહત્વની બાબત છે. કારણ કે, સંશોધનમાં હેતુઓ મારફતે સંશોધનમાં કઈ કઈ બાબતોનો અભ્યાસ કરવામાં આવે તેની જાણકારી મળે છે. આ હેતુઓ સંશોધન યોજના ના ઘડતરમાં દિશા સૂચક બની રહે છે.

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં દર્શાવેલ બાબતો સંશોધન અને નીતિમત્તા ના ખ્યાલને સ્પષ્ટ કરવા અંગે દર્શાવ્યો છે. જે ગોણમાહિતી આધારિત વિવિધ અનુભવો, નિરીક્ષણ, ગ્રંથાલય, વિવિધ પુસ્તકો, ઈન્ટરનેટ વગેરે દ્વારા માહિતી ને અહીં રજૂ કરી છે.

-સંશોધનનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવો

-નીતિમત્તા અંગેના ખ્યાલની રજૂઆત

-સંશોધનમાં નીતિમત્તાની આવશ્યકતા ની સ્પષ્ટતા

-સમાજશાસ્ત્ર વિષયના વિવિધ પ્રશ્નોને દર્શાવી સંશોધનમાં નીતિમત્તાની જરૂરિયાત દર્શાવવી

સંશોધન કરતી વખતે સંશોધકે ધ્યાનમાં રાખવા જેવી બાબતો

સામાજિક સંશોધન નો અર્થ

વૈજ્ઞાનિક પદ્ધતિ દ્વારા પ્રવર્તમાન જ્ઞાનમાં વૃદ્ધિ કરતું મૌલિક પ્રદાન એટલે સંશોધન

પ્રો. ગોપાલઃ સંશોધનનો ખ્યાલ સમજાવતા કહે છે કે વસ્તુલક્ષી અને ચકાસણીજન્ય પદ્ધતિઓ દ્વારા હકીકતો શોધવા માટેની હકીકતો વચ્ચેનો સંબંધ શોધવા માટેની અને તેના આધારે સિદ્ધાંત કે નિયમો તારવવા માટેની વ્યવસ્થિત તપાસને સંશોધન કહેવાય.

Scanned with OKEN Scanner